संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ मई २०१६
वर्ष : २५ अंक : ११
(निरंतर अंक : २८१)
पृष्ठ संख्या : ३२+४
(आवरण पृष्ठ सहित)

वसुधैव कुटुम्बकम्

पूरे विश्व को एक परिवार मानकर उसके मांगल्य व उत्थान के लिए अनेक अभियान, सेवाकार्य व प्रकल्प निरंतर चल रहे हैं पूज्य बापूजी की प्रेरणा से।

सत्संग

देश-विदेश में 'मातृ-पितृ पूजन दिवस'

नारी सशक्तीकरण

विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविर

जरूरतमंदों में राशन व जीवनोपयोगी सामग्री वितरण

गर्मियों में शरबत व छाछ वितरण

पूज्य बापूजी के 'अवतरण दिवस' अर्थात् 'विश्व सेवा-सत्संग दिवस' पर हुए सेवाकार्य देखें आवरण पृष्ठ २, ३ व ४ पर।

सत्यमेव जयते

साँच को आँच नहीं, झूठ को पैर नहीं

२४४ साधक निर्दोष बरी, न्यायालय ने पुलिस को लगायी फटकार पृष्ठ १०

एक और हिन्दू संत पर लगे दुष्कर्म के सभी आरोप निकले बोगस, न्यायालय ने किया निर्दोष बरी पृष्ठ ६

जगद्गुरु शंकराचार्य श्री राघवेश्वर भारतीजी

पूज्य बापूजी के अवतरण दिवस पर निकली संकीर्तन यात्राओं में उमड़ी विशाल जनमेदनी

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

लघु फिल्म 'Blind Faith' देखें 'ऋषि दर्शन', मई २०१६ के अंक में।

इसे आप Youtube.com/santamritvani चैनल पर भी देख सकते हैं।
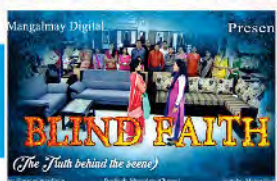
ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २५ अंक : ११ मूल्य : ₹ ६

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २८१)

प्रकाशन दिनांक : १ मई २०१६

पृष्ठ संख्या : ३२+४ (आवरण पृष्ठ सहित)

वैशाख-ज्येष्ठ वि.सं. २०७३

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान

मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा

प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५

सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी

सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा

संरक्षक : श्री जमनादास हलाटवाला

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८

केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२

Email : ashramindia@ashram.org

Website : www.ashram.org
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी	सिंधी व सिंधी (देवनागरी)
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०	₹ ३०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५	₹ ५५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५	₹ १२०
आजीवन	₹ ५००	----	₹ २९०

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

इस अंक में...

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

TV 24 www.livetv24.tv
रोज सुबह ६-३० बजे

रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे

रोज सुबह ७-३० व शाम ५-३० बजे

मंगलमय इंटरनेट चैनल
www.ashram.org/live पर उपलब्ध

* 'टीवी २४' चैनल रिलायंस बिग टीवी (चैनल नं. ४२७) पर उपलब्ध है।
* 'A2Z न्यूज' चैनल डिश टीवी (चैनल नं. ५७३) पर उपलब्ध है।
* 'न्यूज वर्ल्ड' चैनल मध्य प्रदेश में 'हाथवे' (चैनल नं. २२६), छत्तीसगढ़ में 'ग्रांड' (चैनल नं. ४३) एवं उत्तर प्रदेश में 'नेटविजन' (चैनल नं. २४०) पर उपलब्ध है।

बापूजी ने जीने का सही ढंग सिखाया जीवन का उद्देश्य समझाया

(गतांक से आगे)

महिलाओं को तिलक करने हेतु प्रेरित किया

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''ऋषियों ने कितना सुंदर खोजा कि स्त्रियाँ गर्भधारण करती हैं, बच्चे को जन्म देने की उनमें कुदरती योग्यता है तो अधिकांश स्त्रियों का मन और प्राण स्वाधिष्ठान और मणिपुर केन्द्र में ज्यादा रहते हैं । इससे पुरुषों की अपेक्षा माइयों में श्रद्धा का सद्गुण ज्यादा होता है, संशय व भय भी ज्यादा रहता है । एक जरा-सा चूहा पसार हुआ तो हड़बड़ायेंगी : 'मैं तो डर गयी ! मैं तो मर गयी, हाय !...'

स्वाधिष्ठान और मणिपुर केन्द्रों में भय, भावना आदि की अधिकता होती है इसलिए स्त्रियों को हररोज तिलक करने की आज्ञा शास्त्रों ने दी है । मस्तक पर बिंदिया अथवा तिलक लगाने से चित्त की एकाग्रता विकसित होती है तथा मस्तिष्क में पैदा होनेवाले विचार असमंजस की स्थिति से मुक्त होते हैं ।

प्लास्टिक की बिंदियों से किया सावधान

आजकल माइयों के साथ अन्याय हो रहा है । छठा केन्द्र विकसित हो इसलिए तिलक करते हैं । इससे तेज, शोभा, प्रसन्नता, बल, उत्साह बढ़ता है लेकिन उसकी जगह पर उत्साह, बल, तेज को दबानेवाला, मृत पशुओं के अंगों से बनाया हुआ घोल बिंदी चिपकाने के लिए लगा देते हैं । तेज बढ़ाने की जगह पर तेज को कुंठित कर देना... यह कैसा है !

गृहिणी बेचारी आजकल ठगी जाती है । प्लास्टिक की बिंदी लगाती है । ललाट में तिलक करने से शिवनेत्र (आज्ञा चक्र) विकसित होता है जबकि प्लास्टिक की बिंदियों में जानवरों के अंगों से बना सरेस डाला जाता है जो

हानि करता है । छी... छी... ! मरे हुए, कराहते हुए, तड़पते हुए, बीमार जानवरों के अंगों का उपयोग चिपकानेवाली बिंदी में होता है और उसे अपने भाग्य पर लगाना ! गृहिणियों को बहुत घाटा होता है । अतः इसे दूर से ही त्याग दें ।

प्लास्टिक की बिंदियों की अपेक्षा हल्दी, चंदन, सिंदूर, कुमकुम, तुलसी या पीपल की जड़ की मिट्टी व देशी गाय के खुर की मिट्टी विशेष पुण्यदायी, कार्यसाफल्यदायी व सात्त्विक होती है ।'' अधिकांश बाजारू सिंदूर या कुमकुम कृत्रिम हानिकारक रसायनों से बनाये जाते हैं । प्राकृतिक पदार्थों से बनाया गया सिंदूर या कुमकुम ही लाभ करता है ।

यही मेरी गुरुदक्षिणा है

पूज्यश्री कभी भी दक्षिणा के रूप में फूल की पँखुड़ी तक नहीं लेते हैं परंतु सत्संग में महिलाओं के हित के लिए उनसे दक्षिणा के रूप में अनोखा वचन लेते हैं । पूज्य बापूजी कहते हैं : ''जो प्लास्टिक की बिंदी नहीं लगाने का वचन देती हैं और बाजारू क्रीम नहीं लगाने का वचन देते हैं, वे हाथ ऊपर करें तो मैं समझूँगा मेरे को दक्षिणा मिल गयी ।

विद्यार्थियों को बुद्धिशक्ति बढ़ाने की युक्ति सिखायी

(१) भ्रूमध्य को अनामिका से हलका रगड़ते हुए 'ॐ गं गणपतये नमः । ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ।' करके तिलक करें । फिर २-३ मिनट प्रणाम की मुद्रा में (शशकासन करते हुए दोनों हाथ आगे जोड़कर) सिर जमीन पर लगा के रखें । इससे निर्णयशक्ति, बौद्धिक शक्ति में जादुई लाभ होता है । क्रोध, आवेश, वैर पर नियंत्रण पानेवाले द्रव्यों का भीतर विकास होता है ।

(२) सूर्योदय के समय ताँबे के पात्र में जल ले के उसमें लाल फूल, कुमकुम डालकर सूर्यनारायण को अर्घ्य दें । जहाँ अर्घ्य का जल गिरे वहाँ की गीली मिट्टी का तिलक करें तो विद्यार्थी की बुद्धि बढ़ने में मदद मिलती है । बुद्धि में चार चाँद लग जाते हैं ।''

सोते समय ललाट से तिलक का त्याग कर देना चाहिए ।

गुरुजनों का आदर-सम्मान

पूज्य बापूजी कहते हैं :

''अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ।।

'जो पुरुष नित्य बड़ों को, गुरुजनों को प्रणाम करता है और उनकी सेवा करता है उसकी **आयु, विद्या, यश और बल** - ये चारों बढ़ते हैं ।'

बड़े-बुजुर्गों का, माता-पिता का सम्मान करने से, उनका मार्गदर्शन लेने से

अपना जीवन उन्नत होता है। भगवान रामजी अपने माता-पिता का सम्मान करते थे। रोज सुबह उठकर अपने गुरुदेव को तथा माता-पिता को प्रणाम करते थे, उनका आशीर्वाद लेते थे तो कितने महान हो गये !

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥

(श्री रामचरित. बा.कां. : २०४.४)

रामजी कौसल्या माँ को, दशरथजी को, सुमित्रा को प्रणाम करते हैं, कैकेयी के चरणों पर मत्था टेकते हैं। फिर गुरुजी को मत्था टेकते हैं और गुरुजी जानते थे कि 'अगर सत्संग के समय सुबह-सुबह हम नहीं गये तो रामजी यहाँ मत्था टेकने के लिए आयेंगे।' तो वसिष्ठ महाराज 'रामजी को कष्ट न हो, बालक हैं, आश्रम दूर है, यहाँ तक आयेंगे और हमें तो सत्संग करने जाना ही है' ऐसा सोचकर करुणावश स्वयं ही आ जाते प्रातःकाल।''

साष्टांग दंडवत् प्रणाम किसलिए ?

भारतीय संस्कृति में अनादि काल से चली आ रही शिष्य द्वारा गुरु को प्रणाम करने की परम्परा का वैज्ञानिक रहस्य बताते हुए पूज्यश्री कहते हैं : ''विदेश के बड़े-बड़े विद्वान एवं वैज्ञानिक भारत में प्रचलित गुरु समक्ष शिष्य के साष्टांग दंडवत् प्रणाम की प्रथा को पहले समझ न पाते थे कि भारत में ऐसी प्रथा क्यों है। अब बड़े-बड़े प्रयोगों के द्वारा उनकी समझ में आ रहा है कि यह सब युक्तियुक्त है। इस श्रद्धा-भाव से किये हुए प्रणाम आदि द्वारा ही शिष्य गुरु से लाभ ले सकता है, अन्यथा आध्यात्मिक उत्थान के मार्ग पर वह कोरा ही रह जाय।'' (क्रमशः)

समस्याओं का समाधान देते सत्साहित्य - पूज्य बापूजी

जिसका लोभी स्वभाव है, वह 'ईश्वर की ओर' पुस्तक पढ़ा करे। जिसको इसी जन्म में संसार से पार होना हो, उसको भी 'ईश्वर की ओर' पुस्तक बार-बार पढ़नी चाहिए। जिसका कमजोर शरीर है, वह 'जीवन विकास' पुस्तक पढ़ा करे। जिसका डरपोक स्वभाव है, वह 'जीवन रसायन' पुस्तक पढ़ा करे, डर चला जायेगा। 'जीवन रसायन' पुस्तक गर्भिणी पढ़े तो प्रसूति की पीड़ा के सिर पर पैर रखकर आराम से प्रसूति करेगी, डरेगी नहीं। डर के कारण प्रसूति की पीड़ा अधिक होती है। और फिर छोटे-मोटे ऑपरेशन करा के स्वास्थ्य का सत्यानाश नहीं करना चाहिए।

(उपरोक्त सत्साहित्य सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों व समितियों के सेवाकेन्द्रों में उपलब्ध है।)

एक-सी कूटनीतिक साजिशों के तहत हिन्दू संतों पर

कर्नाटक के श्री रामचन्द्रपुर मठ के प्रमुख जगद्गुरु शंकराचार्य श्री राघवेश्वर भारतीजी के खिलाफ लगाये गये दुष्कर्म के सभी आरोपों को गत ३१ मार्च को बेंगलुरु सत्र न्यायालय ने खारिज कर दिया। एक ५१ वर्षीय महिला ने राघवेश्वर भारतीजी पर उसके साथ १६९ से अधिक बार दुष्कर्म करने का आरोप लगाया था।

श्री राघवेश्वरजी का मामला आँखें खोल देनेवाला एक और प्रत्यक्ष उदाहरण है कि किस प्रकार छुपे तौर पर हिन्दुत्व को नष्ट करने का एक विशाल कुचक्र चलाया जा रहा है।

मा. न्यायाधीश श्री जी.बी. मुदीगौदर ने कहा कि ''आरोपी (स्वामी राघवेश्वरजी) के खिलाफ कोई भी सबूत नहीं है। यह मामला आरोपी को महज उत्पीड़ित और शर्मिंदा करने की एक कोशिश के सिवाय और कुछ भी नहीं है।''

श्री राघवेश्वरजी के अलावा ऐसे कई हिन्दू संत हैं, जिन्हें झूठे आरोपों के तहत बिना किसी ठोस सबूत के वर्षों से कारागृहों में रखा गया है। पूज्य बापूजी पर चलाये जा रहे मामलों में ऐसे कई मुद्दे हैं जो राघवेश्वर भारतीजी के मामले से समानता रखते हैं। आइये, उन पर दृष्टि डालें :

(१) एफआईआर दर्ज करवाने के पूर्व अभियोक्त्री (आरोप लगानेवाली महिला) के पति द्वारा श्री राघवेश्वरजी से ३ करोड़ रुपये की फिरौती माँगी गयी थी। इस मामले में दम्पति को गिरफ्तार कर पूछताछ भी की गयी थी।

☛ इसी प्रकार ८ अगस्त २००८ को षड्यंत्रकारियों ने आश्रम में बापूजी के नाम से फैक्स किया था कि 'एक सप्ताह के अंदर हमें ५० करोड़ रुपये दे दो अन्यथा तुम और तुम्हारा परिवार जेल की हवा खाने को तैयार हो जाओ। बनावटी मुद्दे तैयार हैं, तुम्हें पैसों की हेराफेरी में, जमीनों एवं लड़कियों के झूठे केसों में फँसायेंगे।' एक स्टिंग ऑपरेशन में राजू चांडक नामक साजिशकर्ता ने इसी प्रकार के षड्यंत्र रचने की बात को स्वीकारा भी है।

(२) श्री राघवेश्वरजी के मामले में न्यायालय के आदेश में उल्लेख किया गया है कि 'आरोप लगानेवाली महिला ने स्पष्ट रूप से कहा है कि वह बीच में छः महीने से भी अधिक समय तक मठ से संबंधित गतिविधियों से दूर रही है। यदि उसके द्वारा लगाये गये आरोप के मुताबिक उसे सचमुच यौन-उत्पीड़न का सामना करना पड़ा था तो उसे पुनः मठ में वापस नहीं आना चाहिए था। महिला का यह कृत्य उसके गुप्त, स्वार्थी उद्देश्य और स्वामीजी की छवि को धूमिल करने के लिए रची गयी सुनियोजित, भयावह रूपरेखा को स्पष्ट करता है।'

☛ पूज्य बापूजी पर आरोप लगानेवाली सूरत की महिला ने स्वयं एफआईआर में लिखवाया है कि जब वह आश्रम में रहती थी उस दौरान उसका दूसरे शहरों में भी आना-जाना चालू रहता था, यहाँ तक कि अपने पिता के घर भी वह कई बार गयी । अगर उसके साथ ऐसी कोई घटना घटती तो वह आश्रम में वापस क्यों आती ?

वह कहती है कि 'उसके साथ सन् २००१ में तथाकथित घटना घटी । २००२ में उसकी छोटी बहन आश्रम में रहने के लिए आयी थी ।' अगर किसी लड़की के साथ कहीं बलात्कार हुआ हो तो क्या वह चाहेगी कि उसकी छोटी बहन भी ऐसी जगह पर रहने आये ? कदापि नहीं ।

(३) श्री राघवेश्वरजी के मामले के फैसले में एक बिंदु यह भी लिखा है कि 'आरोपी को तो सिर्फ इस आधार पर ही बरी कर देना चाहिए कि कथित पहली घटना की तारीख से ३ वर्ष से भी अधिक की देरी के बाद इस मामले को दर्ज कराया गया एवं कथित तौर पर मामले से जुड़ी सामग्रियों को ८२ दिनों के बाद पेश किया गया ।'

☛ इस प्रकार अगर समयावधि किसी मामले में निर्दोषता की सिद्धि में इतनी महत्त्वपूर्ण है तो पूज्य बापूजी के ऊपर अहमदाबाद में और नारायण साँईंजी पर सूरत में जो मामले थोपे गये हैं, उनमें तो तथाकथित घटना के १२ और ११ साल बाद एफआईआर दर्ज करायी गयी है ! ऐसे में अहमदाबाद व सूरत मामलों में पूज्य बापूजी व नारायण साँईंजी को जमानत तक नहीं मिल पायी है ।

(४) राघवेश्वर भारतीजी के मामले में अभियोजन (आरोपकर्ता) पक्ष के गवाहों के बयान और अभियोक्त्री के स्वयं के बयान खुद उन्हींके पक्ष के खिलाफ बोलते हैं ।

☛ इसी प्रकार बापूजी के अहमदाबाद मामले में अभियोक्त्री ने गांधीनगर कोर्ट में एक याचिका में कहा था कि 'मैंने दबाव में आकर आरोप लगाया था, मैं अपना बयान बदलकर सत्य उजागर करना चाहती हूँ ।' इसके अलावा पूज्यश्री के जोधपुर मामले की मुख्य गवाह सुधा पटेल ने जोधपुर सत्र न्यायालय में बताया कि 'पुलिसवालों ने मेरे बयान लिये थे, यह गलत (झूठी बात) है । आज से पहले न मैं कभी जोधपुर आयी और न कभी कहीं बयान दिये थे ।'

(५) राघवेश्वरजी के मामले में महिला के मोबाइल कॉल डिटेल रजिस्टर और प्रत्यक्ष गवाह के बयान से पता चलता है कि तथाकथित घटना के समय महिला वहाँ थी ही नहीं ।

☛ ठीक उसी प्रकार पूज्य बापूजी के जोधपुर मामले में न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी ने खुलासा किया कि ''लड़की के फोन रिकॉर्ड्स से पता लगा कि जिस समय पर वह कहती है कि वह कुटिया में थी, उस समय वह वहाँ थी ही नहीं ! उसी समय बापूजी सत्संग में थे और आखिर में मँगनी के कार्यक्रम में व्यस्त थे । वे भी वहाँ कुटिया में नहीं थे ।''

इस प्रकार के सभी पहलुओं को देखने के बाद केवल आश्चर्य ही किया जा सकता है कि पूज्य बापूजी को पिछले २ वर्ष ८ महीनों से अधिक समय से अभी तक जमानत तक क्यों नहीं मिल पायी ?

हिन्दू संतों पर झूठे आरोप लगवाकर उन्हें अपराधी साबित करने के लिए लगभग एक-सी नीति अपनानेवाले षड्यंत्र साफ देखे जा सकते हैं । भारतीयों को अपनी संस्कृति व देश के खिलाफ इस सिलसिलेवार अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र को समझने के लिए बहुत सतर्क और विचारशील रहना होगा एवं संगठित होकर इसका प्रतिकार करना होगा । (संकलक : श्री रू.भ. ठाकुर)

जब-जब भगवान इस धरती पर अवतार लेते हैं तो पहले प्रायः उसकी भविष्यवाणी हो जाती है। एक त्रिकालज्ञानी संत ने पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के अवतरण एवं जीवनकार्यों के बारे में इंगित करती हुई भविष्यवाणी की थी।

सैकड़ों वर्ष पहले जूनागढ़ (गुज.) के पास एक गाँव में एक शिव-उपासक निःसंतान ब्राह्मण दम्पति रहते थे। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर एक दिन भगवान शिव ने ब्राह्मण को सपने में दर्शन दिये और बोले : ''भक्तराज ! मैं तुम्हारी मनोव्यथा को जानता हूँ। तुम्हारे भाग्य में संतान-सुख नहीं है परंतु मेरे आशीर्वाद से मेरा अंश तुम्हारे घर पुत्ररूप में पलेगा। कल सुबह मंदिर के फूलों में तुम्हें एक बालक मिलेगा। उसे ही अपनी संतान मानकर पालन-पोषण करना, वह बड़ा होकर त्रिकालज्ञानी बनेगा।''

सुबह पति-पत्नी दोनों बड़ी प्रसन्नता से मंदिर में पूजा कर ही रहे थे कि इतने में किसी बालक के रोने की आवाज आयी। पास जाकर देखा तो फूलों के ढेर में एक नवजात शिशु लेटा है। ब्राह्मणी ने उस तेजस्वी बालक को तुरंत गले से लगा लिया। सीने से लगाते ही माँ का वात्सल्य दूध बनकर फूट पड़ा। ब्राह्मण दम्पति बच्चे को घर ले आये।

नामकरण की बात चली तो गाँव के मुखिया ने कहा : ''यह तो देव का दिया हुआ है इसलिए इसका नाम 'देवो' ही रखो।'' बालक संस्कृत के श्लोकों को सहज में ही याद कर लेता था। उसकी वाणी रहस्यमयी थी, कभी-कभी सुननेवालों को उसका रहस्य समझ में नहीं आता था। वही बालक बड़ा होकर 'देवायत पंडित' के नाम से सुप्रसिद्ध हुआ। देवायत पंडित ने भजनों के माध्यम से कई सचोट भविष्यवाणियाँ की हैं। कई शताब्दियों पहले उन्होंने पहली भविष्यवाणी की थी, जिसके कुछ अंशों का भावार्थ इस प्रकार है :

'हमारे गुरु शोभाजी महाराज ने आगम (भविष्य) के बारे में बताया है। सद्गुरु की वाणी झूठी नहीं होती। जैसा लिखा है, जैसा कहा है, वैसे दिन आयेंगे। पाप का दौर आयेगा और धरती पापी जनों का भोग माँगेगी। उनमें कुछ परस्पर लड़ाई-झगड़े करेंगे और उनका खड्ग से (आधुनिक शस्त्रों से) संहार होगा, कुछ लोग विविध प्रकार

के रोगों से पीड़ित होकर मरेंगे।

पहले तेज हवाएँ चलेंगी, तूफान उठेंगे, अकाल से मनुष्य पीड़ित होंगे, नदियों का पानी सूख जायेगा। (इसमें प्राकृतिक आपदाओं का संकेत है और परमाणु बम विस्फोट के बाद भी ऐसा वातावरण बनता है इसलिए तीसरे विश्व युद्ध का भी संकेत है।)

हे देवलदे ! (देवायत पंडित की धर्मपत्नी का नाम) ऐसे विकट समय में नर-नारी धर्म के आदेशों का पालन नहीं करेंगे। 'धर्म ग्रंथ झूठे हैं और उनके आदेश झूठे हैं' - ऐसा मानने लगेंगे।

हे संतो ! उत्तर दिशा से साहब (भगवान) आयेंगे (यह बात गुजरात में कही गयी है और सिंध प्रांत गुजरात के उत्तर में है)। साबरमती के तट पर यति (पूज्य बापूजी) और सती (पूजनीया माताजी) आसन जमायेंगे। वहाँ अच्छाई और बुराई के बीच संग्राम होगा (पूज्य बापूजी एवं उनके शिष्यों द्वारा देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए विरोधी शक्तियों के साथ पिछले कई दशकों से सतत संघर्ष किया जा रहा है)। वे सदा के लिए बुराई को मारकर निष्कलंक नाम धारण करेंगे। हे देवलदे ! ऐसा समय आयेगा कि सौ-सौ गाँव की सीमा में रहनेवाले, शहर और गाँव के लोग एकमत हो जायेंगे (अहमदाबाद आश्रम में जो 'ध्यानयोग शिविर' लगते थे, उनमें देश के अनेक गाँवों और शहरों के लोग सम्मिलित होकर एक आत्मोन्नति के लिए सम्मत होते थे इस बात का संकेत है) और कांकरिया तालाब पर बड़े तम्बू तानकर रहेंगे। (उस समय अहमदाबाद का नाम 'कर्णावती' था पर यह नाम बाद में बदल जायेगा, यह बात जानकर देवायत पंडितजी ने कर्णावती नगर के बदले 'कांकरिया तालाब' का नाम दिया है।) उस समय की वे घड़ियाँ बड़ी रमणीय होंगी। सूर्य अपनी १६ कलाओं से सम्पन्न तथा धरती खुशहाल होगी। कलियुग होगा फिर भी सत्य के आग्रही सच्चे संतों के तपोबल से सत्ययुग जैसा समय आयेगा। ऐसे भविष्य के लक्षण गुरुजी ने मुझे सुनाये हैं।'

सभी जानते हैं कि सनातन धर्म-संस्कृति की रक्षा करने के लिए बापूजी ५० सालों से लगे हुए हैं। आज पाश्चात्य जगत की पाशविक शक्तियाँ भारत की संस्कृति, संस्कार व परम्पराओं को नष्ट करने में लगी हैं। पूज्य बापूजी अनेक प्रकार के झूठे आरोप सहकर भी संस्कृति की रक्षा में अपने करोड़ों साधकों को साथ लेकर लगे हुए हैं। वे तो कहते हैं कि 'विश्वगुरु हो भारत प्यारा, ऐसा है संकल्प हमारा।' अब निश्चित ही सुंदर सुहावना समय आयेगा। युग-परिवर्तन होकर सत्ययुग जैसा समय आयेगा। देवायत पंडित की भविष्यवाणी आज भी पत्थर पर शिलालेख के रूप में गुजराती भाषा में अंकित है।

सामुद्रिक शास्त्र के एक प्रसिद्ध विद्वान ने पूज्य बापूजी के श्रीचरणों और करकमलों का अवलोकन करके पंचेड़ आश्रम (म.प्र.) में कहा था कि ''पूज्य बापूजी पहले १६ बार अवतार ले चुके हैं और अब १७वीं बार आये हैं।''

अगर किसीको त्रिकालज्ञानी महापुरुषों और भविष्यवेत्ताओं में श्रद्धा न हो तो उसे एक **विश्वप्रसिद्ध आभा (ओरा) विशेषज्ञ डॉ. हीरा तापड़िया** के तथ्यों पर तो विश्वास करना ही पड़ेगा क्योंकि यह एक वैज्ञानिक अध्ययन है जिसे नास्तिक लोगों को भी मानना पड़ता है। पूज्यश्री की आभा का अध्ययन करके उन्होंने कहा : ''मैंने अब तक लगभग सात लाख से भी ज्यादा लोगों के आभा-चित्र लिये हैं, जिनमें एक हजार विशिष्ट व्यक्ति शामिल हैं, जैसे - बड़े संत, साध्वियाँ, प्रमुख व्यक्ति आदि। आज तक जितने भी लोगों की आभाएँ मैंने ली हैं, उनमें सबसे अधिक प्रभावशाली एवं उन्नत आभा संत श्री आशारामजी बापू की पायी।

बापू की आभा में बैंगनी रंग है, जो यह दर्शाता है कि बापूजी आध्यात्मिकता के **(शेष पृष्ठ १४ पर)**

२४४ साधक निर्दोष बरी

न्यायालय ने पुलिस को लगायी फटकार

गांधीनगर (गुज.) के जिला व सत्र न्यायालय ने वर्ष २००९ में गांधीनगर में आयोजित रैली के दौरान पुलिस के साथ कथित रूप से मारपीट के मामले में ११ अप्रैल २०१६ को २४४ साधकों को निर्दोष बरी कर दिया।

६ साल से अधिक समय के दौरान १२२ गवाहों के बयान, जिरह एवं लम्बी बहस हुई। अदालत के अनुसार 'अभियोजन पक्ष इस मामले में साधकों के खिलाफ कोई आरोप सिद्ध नहीं कर सका । आरोप-पत्र में कई विसंगतियाँ हैं। घायलों की रिपोर्ट भी सही प्रतीत नहीं होती है।' साथ ही न्यायालय ने साधकों के खिलाफ हिंसा व हत्या के प्रयास के आरोप के तहत मामला दर्ज करने पर पुलिस की खिंचाई भी की।

यह था मामला

गुजरात के एक अखबार द्वारा किये जा रहे अनर्गल कुप्रचार के विरोध में २६ नवम्बर २००९ को गांधीनगर में एक प्रतिकार रैली निकाली गयी थी। इस रैली में कुप्रचारकों के सुनियोजित षड्यंत्र के तहत असामाजिक तत्त्वों ने साधकों जैसे कपड़े पहनकर भीड़ में घुस के पथराव किया, जिसके प्रत्युत्तर में पुलिस ने साधकों-भक्तों एवं आम जनता पर, जिनमें अनेकों महिलाएँ, वृद्ध व बच्चे भी थे, न सिर्फ बुरी तरह लाठियाँ बरसायीं बल्कि आँसू गैस के गोले छोड़े और उन्हें गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया।

दूसरे दिन पुलिस ने अहमदाबाद आश्रम पर अचानक धावा बोल दिया। आश्रम में भारी तोड़फोड़ की तथा साधकों को लाठियों और बंदूक के कुंदों से बुरी तरह पीटते हुए दौड़ा-दौड़ाकर पुलिस की गाड़ियों में ठूँस के जेल में डाल दिया। उन्हें २४ घंटे से ज्यादा समय तक गैरकानूनी रूप से हिरासत में रखा गया तथा शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित किया गया, उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत किया गया।

इस प्रकार षड्यंत्रकारियों द्वारा बद-इरादतन उपजायी गयी इस घटना के तहत निर्दोष साधकों पर आई.पी.सी. ३०७ (हत्या का प्रयास) व अन्य कई गम्भीर धाराओं के अंतर्गत पुलिस ने मामला दर्ज किया था।

साधकों में बच्चे, महिलाएँ व वृद्ध साधक भी शामिल थे, जिन्हें कई सप्ताह तक जेल में रहना पड़ा। पुलिस रिमांड के दौरान एवं जेल में भी खूब शारीरिक व मानसिक यातनाएँ सहन करनी पड़ीं।

गौरतलब है कि जब इन निर्दोष साधकों के ऊपर आरोप लगाया गया था, उस समय मीडिया ने इस घटना को अत्यंत विकृत रूप देकर खूब बढ़ा-चढ़ा के दिखाया था तथा एड़ी-चोटी का जोर लगाकर **(शेष पृष्ठ १४ पर)**

परहित के लिए विपत्ति मोल लेते हैं संत-महापुरुष

उस समय कोसल देश में सूर्यवंश के राजा ध्रुवसंधि का राज था। उनकी दो रानियाँ थीं - मनोरमा और लीलावती। मनोरमा का पुत्र सुदर्शन बड़ा भाई और लीलावती का पुत्र शत्रुजित छोटा भाई था। कुछ समय बाद राजा की असमय मृत्यु हो गयी। सुदर्शन के नाना कलिंग-नरेश वीरसेन और शत्रुजित के नाना उज्जैन-नरेश युधाजित अपने-अपने नाती को राजगद्दी पर बिठाना चाहते थे। दोनों में युद्ध हुआ। वीरसेन युद्ध में मारे गये। शत्रुजित का नाना युधाजित अपने नाती के राज्य को निष्कंटक बनाने के लिए सुदर्शन की हत्या करनेवाला था। इसलिए महारानी मनोरमा अपने पुत्र को लेकर चुपके-से भाग निकली। गंगातट पर आयी तो वहाँ के निषाद डकैतों ने उनका सारा धन-माल, गहने छीन लिये। विपत्तियों-पर-विपत्तियाँ टूट रही थीं - पति मर गये, पिता युद्ध में मारे गये, राजपाट छिन गया...। अतः पुत्र को लेकर रानी किसी प्रकार गंगा पार करके भारद्वाज ऋषि के आश्रम में आयी। ऋषि ने उसे आश्रय दिया और कहा : ''हे कल्याणि ! तुम यहाँ भयरहित होकर निवास करो।''

जब शत्रुजित के नाना को इस बात का पता चला तो वह सेना लेकर वहाँ आ धमका और ऋषि से बोला : ''हे सौम्य मुने ! आप हट छोड़ दीजिये और मनोरमा को विदा कीजिये, इसे छोड़कर मैं नहीं जाऊँगा। (यदि आप नहीं मानेंगे तो) मैं इसे अभी बलपूर्वक ले जाऊँगा।''

राजा के ऐसे गर्वपूर्ण वचन सुनकर ऋषि बोले : ''जैसे प्राचीन काल में विश्वामित्र वसिष्ठ मुनि की गौ ले जाने के लिए उद्यत हुए थे, उसी प्रकार यदि आपमें शक्ति हो तो आज मेरे आश्रम से इसे बलपूर्वक ले जाइये !''

ऋषि के ऐसे निर्भीक उत्तर से राजा भयभीत हो गया। उसने अपने वृद्ध मंत्री से सलाह की। मंत्री ने कहा : ''हे राजन् ! ऐसा दुस्साहस नहीं करना चाहिए। तपस्वियों, ब्रह्मज्ञानी संतों के साथ किया जानेवाला संघर्ष निश्चित ही कुल का नाश करनेवाला होता है। सुदर्शन को यहीं छोड़ दीजिये।'' राजा लौट गया।

ऋषि के आश्रम में सुदर्शन ने प्रेम, अनुशासन, शिक्षा तथा सुसंस्कार पाये। ५ वर्ष की उम्र में बालक मंत्र को सबका सार समझकर कभी नहीं भूलता था। वह खेलते, सोते मन-ही-मन मंत्र जपता था। मुनि ने राजकुमार को वेद, धनुर्वेद, नीतिशास्त्र की शिक्षा दी। मंत्रजप तथा उपासना के प्रभाव से उसे दिव्य अस्त्र-शस्त्र प्राप्त हुए। इसके बाद सुदर्शन ने अयोध्या का राज्य पुनः प्राप्त कर लिया। युद्ध में शत्रुजित तथा (शेष पृष्ठ २१ पर)

न प्रकाश बदलेगा न पर्दा !

अनादि जीव को मेरा मानना, फिर उसके बने रहने की इच्छा, न रहने पर रोना (और खुद न रो सको तो किराये पर स्यापा करनेवालों से रुलवाना) - यह सब अनादि अविद्याजन्य शोक, मोह का परिवार है जो आत्मज्ञान से नष्ट हो जाता है। सम्पूर्ण देश, सम्पूर्ण काल और सम्पूर्ण वस्तु तथा इन सबका अभिन्ननिमित्तोपादान कारण* - सब अपना आत्मा ही है। यह आत्मविज्ञान है।

यस्मिन् विज्ञाते सति आत्मैव
सर्वाणि भूतानि अभूत् ।

ये देश-काल-वस्तु एक साथ ही बनते जाते हैं, एक साथ ही छूटते जाते हैं, एक साथ ही आते जाते हैं। सेकंड पर सेकंड आते-जाते रहते हैं और उसका दृश्य भी साथ-साथ चलता जा रहा है, उसका स्थान भी बदलता जा रहा है। स्वप्न में दृश्य और उसका देश तथा उसका काल युगपत् प्रतीत होते ही हैं। सिनेमा के पर्दे पर भी ऐसा ही दिखता है। इसी प्रकार आत्मा के पर्दे पर मन से रँगी हुई आत्मा की ही रोशनी अनेक नाम-रूपों में दिखाई पड़ती रहती है। यह बाहरपना, यह भीतरपना, यह ठोसपना, अब, तब, यहाँ, वहाँ, मैं, तू - सब आत्मप्रकाश ही है।

'पर्दे पर दृश्य बदलें नहीं' - यह बालक-बुद्धि है, यह मोह है। जो इसका रहस्य जानता है वह जानता है कि दृश्य बदलेंगे और फिर बदलेंगे परंतु वस्तुतः न प्रकाश बदलेगा न पर्दा ! फिर न बदलने का आग्रह क्यों ? बदलने पर रोना क्यों ? वीभत्स से द्वेष क्यों और सुंदर से राग क्यों ?

बस, इतना ही है ब्रह्मज्ञान !

प्यासा चाहे गंगा की भरी धार में जल पिये और चाहे घड़े से जल पिये, तृप्ति में कोई अंतर नहीं है। ऐसे ही एक व्यक्ति चारों वेदों का स्वाध्याय करके 'अहं ब्रह्मास्मि' समझता है और दूसरा कोई श्रद्धालु गुरुमुख से श्रवण करके ही 'अहं ब्रह्मास्मि' को जान गया। दोनों की तृप्ति में कोई अंतर नहीं है।

अनेकानि च शास्त्राणि स्वल्पायुर्विघ्नकोटयः ।
तस्मात् सारं विजानीयात् क्षीरं हंस इवाम्भसि ॥

(गरुड़ पुराण, धर्म कांड - प्रेत कल्प : ४९.८४)

शास्त्र अनंत हैं, आयु थोड़ी है, विघ्न करोड़ों हैं। इसीलिए हंस की तरह नीर-क्षीर विवेक करके सार जान ले।

बस, इतना ही है ब्रह्मज्ञान कि 'मैं ब्रह्म हूँ और मेरे सिवाय जीव, जगत, ईश्वर नाम की कोई अलग सत्ता या वस्तु नहीं है। सब मैं ही मैं हूँ।' इसका फल है अविद्या की निवृत्ति, जिससे शोक, मोहादि सब भस्म हो जाते हैं।

असल में तुम वही हो जो पहले थे और आगे भी वही रहोगे। ये घटनाएँ जो हैं वे फिल्म की तरह चल रही हैं। इनमें जो मोह करता है उसीको शोक होता है। मोह का जो दृश्य बीत जाता है, वह शोक देता है और जो दृश्य अनखुला है, वह भय देता है। वर्तमान से हम चिपके हुए हैं।

तत्त्वज्ञान ने केवल आपके मन में जो अज्ञानमूलक भ्रांतिजन्य मोह की परिस्थिति थी उसको काट दिया; और कुछ नहीं बदला। ज्ञान केवल वहीं परिवर्तन करता है जहाँ अज्ञान रहता है। वह न आत्मचैतन्य में कोई परिवर्तन करता है और न जड़ जगत में कोई परिवर्तन करता है। केवल बुद्धि के भ्रम की निवृत्ति करता है वेदांत। प्रपंच की

धारा जो

बह रही है और वृत्तियों की धारा जो बह रही है वे वैसे ही बहती रहती हैं। बस, आत्मस्वरूप के बारे में भूल मिट गयी। तमाशे की सच्चाई के भ्रम के कारण जो हँसना या रोना-धोना था, शोक, भय, कम्पन था वह तमाशे को मिथ्या जान लेने पर खत्म हो गया।

तो आप सर्वात्मभाव को प्राप्त हो जायेंगे

संसार का अर्थ ही है परिवर्तन, संसरणशील, जो सर्प की तरह सरके। बचपन आया चला गया, जवानी आयी चली गयी, बुढ़ापा आया है चला जायेगा, पैसा आता है चला जाता है। पुराना जायेगा नया आयेगा। आप न केवल इस परिवर्तनशील संसार के अधिष्ठान तथा प्रकाशक हैं बल्कि यह भी समझना आवश्यक है कि यह संसार चल है और आप अचल हैं, ये वस्तुएँ जड़ हैं, आप अविनाशी, परिपूर्ण चेतन हैं। इस प्रकार जो सर्वोपादान अविनाशी परिपूर्ण अद्वय चेतन तत्त्व है वह आप हैं और यह सब आपका ही विवर्त है। जब आप ऐसा जानेंगे तब आप सर्वात्मभाव को प्राप्त हो जायेंगे।

(पृष्ठ ११ से '२४ साधक निर्दोष बरी...' का शेष) साधकों को गुंडे, उपद्रवी, खूनी सिद्ध करने में एवं आश्रम व पूज्य बापूजी को समाज में बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी लेकिन अब जबकि सच्चाई सामने आ चुकी है तो कुछ गिने-चुने मीडिया को छोड़कर अन्य ने इस खबर को समाज तक पहुँचाने में कोई रुचि नहीं दिखायी। क्या यही है मीडिया की निष्पक्षता ? इससे तो सिद्ध होता है कि ऐसा मीडिया भी असामाजिक तत्त्वों से मिलकर समाज को गुमराह करता है। ऐसे मीडिया का सामूहिक बहिष्कार करना समाज का नैतिक कर्तव्य है।

जब असामाजिक तत्त्व पुलिस और मीडिया का सहयोग लेकर इतनी बड़ी आध्यात्मिक संस्था के निर्दोष साधकों को भी यातना दे सकते हैं, तब आम आदमी का कितना शोषण होता होगा यह विचारणीय है।

इस सबमें आश्रम एवं निर्दोष साधकों ने जो यातनाएँ सहीं, उन्हें जो आर्थिक व सामाजिक क्षति भुगतनी पड़ी उसकी भरपाई क्या कभी भी हो पायेगी ?

(पृष्ठ १० से 'जब भी होती ...' का शेष) शिरोमणि हैं। यह सिद्ध ऋषि-मुनियों में ही पाया जाता है। बैंगनी रंग का मतलब है कि उनके आज्ञा चक्र और सहस्रार चक्र प्रबुद्ध हो गये हैं, खुल गये हैं, चार्ज हो गये हैं; वे (ऊर्ध्व लोकों से) शक्ति ले रहे हैं और (इस लोक में) शक्ति दे रहे हैं।

बापू की आभा में जो खास चीज है वह है शक्ति देने की क्षमता। दूसरे लोग अन्य लोगों की शक्ति ग्रहण कर सकते हैं लेकिन बापूजी की आभा में यह प्रमुखता मैंने पायी कि वे सम्पर्क में आये व्यक्ति की ऋणात्मक ऊर्जा को ध्वस्त कर धनात्मक ऊर्जा प्रदान करते हैं।

बापू की आभा देखकर मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य हुआ क्योंकि लगातार पिछले कम-से-कम दस जन्मों से बापूजी समाजसेवा का यह पुनीत कार्य करते आ रहे हैं; लोगों पर शक्तिपात करके आध्यात्मिकता में लगाना, स्वस्थ करना, समाज की बुराइयों को दूर करना, ज्ञानामृत बाँटना, आनंद बरसाना आदि। मुझे पिछले दस जन्मों तक का ही पता चल पाया, उसके पहले का पढ़ने की क्षमता मशीन में नहीं थी।''

(डॉ. हीरा तापड़िया के विडियो की लिंक : https://goo.gl/0oeHP5)

(संकलक : श्री इन्द्र सिंह राजपूत)
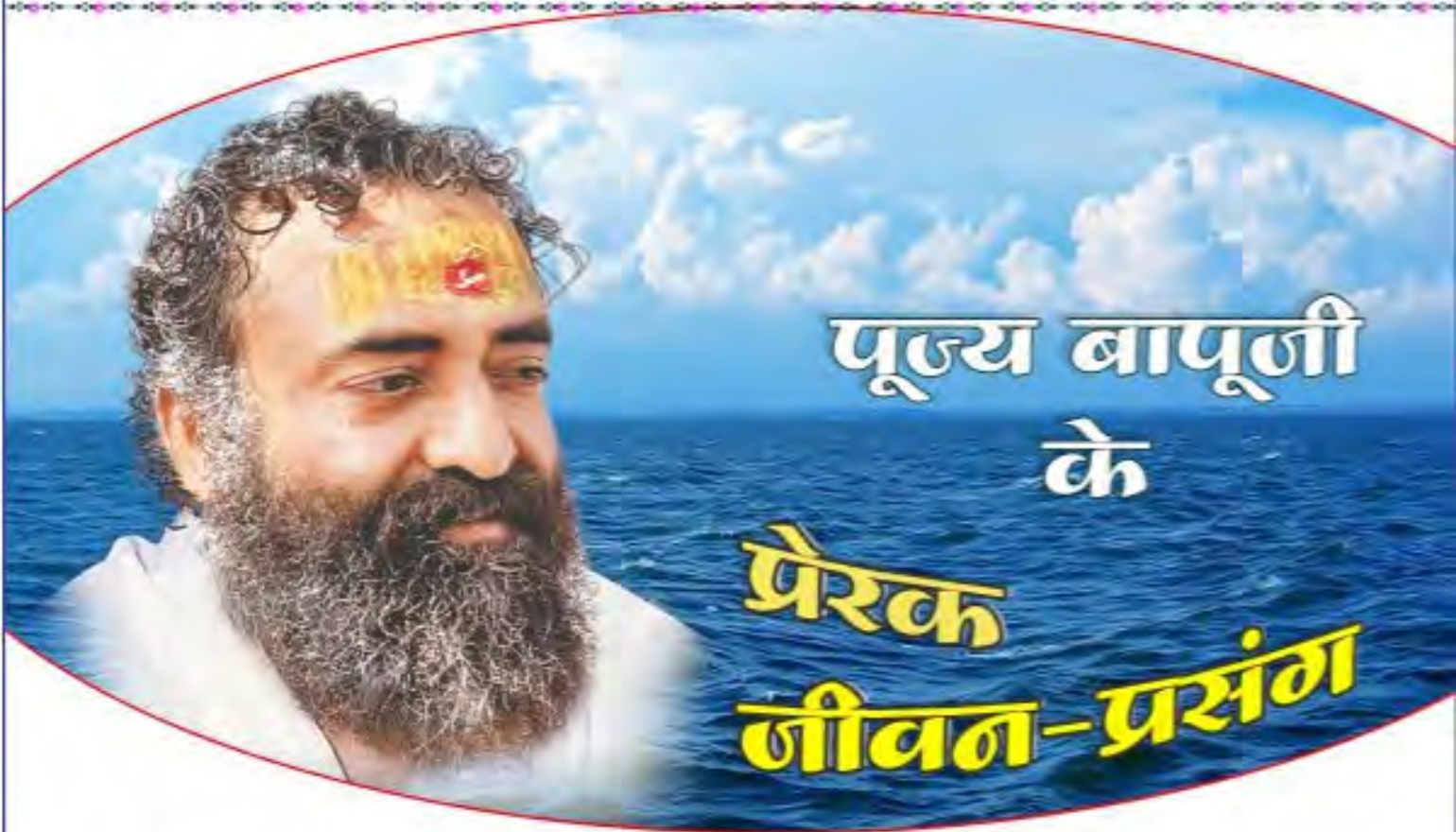
पूज्य बापूजी के प्रेरक जीवन-प्रसंग

श्रीमती शारदा पटेल सन् १९७५ से बापूजी का सत्संग-सान्निध्य पाती रही हैं। वे बता रही हैं बापूजी के सान्निध्य में उनके जीवन में हुए कुछ रोचक प्रसंग :

बापूजी का सरल स्वभाव

मैंने शुरू से ही पूज्य बापूजी का बहुत ही सरल स्वभाव देखा है। सन् १९७५ में मैं पिताजी को लेकर आश्रम आयी थी। उनके पैर में काफी तकलीफ थी। उस समय आश्रम के चारों तरफ जंगल था। आश्रम तक आने के लिए यातायात का कोई साधन भी नहीं मिलता था तो हम बड़ी मुश्किल से पैदल चलकर आये।

आश्रम पहुँचे तो एक ओजस्वी-तेजस्वी काली दाढ़ीवाले महाराज ने हमसे पूछा : ''आप लोग कहाँ से आये ?''

मैं बोली : ''ऊंझा (गुजरात) से।''

''किससे मिलना है ?''

''बापू से। आशाराम बापू मिलेंगे ?'' तब संस्कार नहीं थे तो हम ऐसा बोलते थे।

''हाँ, मिलेंगे। आप लोग बैठो, मैं उनको बताता हूँ कि कोई आया है।''

थोड़ी देर बाद हमने देखा तो जिनसे हमारी बात हुई थी वे ही महाराज सत्संग-मंडप में आकर व्यासपीठ पर बैठ गये और हमें बुलवाया। हम गये तो वे बोले : ''अभी देखा ?''

मैंने पूछा : ''आप आशाराम बापू हैं ?''

''हाँ, मैं आशाराम बापू हूँ।''

''पहले तो आपने बोला कि मैं भेजता हूँ आशाराम बापू को... !''

बापूजी मुस्कराये, बोले : ''यह तो ऐसा होता है।'' मैं तो हैरान रह गयी !

फिर बापूजी ने सत्संग किया। सत्संग में मैं थैला गोद में लेकर बैठी थी।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

इसमें कोई सार नहीं, इसे छोड़ दो।'' मैंने थैला नीचे रखा। घुटने के दर्द का इलाज बताते हुए पूज्यश्री बोले : ''गोझरण को मटके में भरकर ३-४ सप्ताह तक गड्ढे में गाड़ देना। फिर उसको लगाकर मालिश करना।''

सत्संग के बाद बापूजी ने मेरे पिताजी को मोक्ष कुटीर में बुलाकर मंत्रदीक्षा दी। पिताजी को चलने में तकलीफ थी इसलिए जब हम जाने लगे तो पूज्यश्री स्कूटर से सड़क तक छोड़ के आये।

१४-१५ लोगों का भोजन १०० लोगों के लिए पर्याप्त !

ऊंझा में पहली बार जब बापूजी हमारे घर आये तो मुझे पता नहीं था कि कितने लोग आयेंगे। मैंने बड़ी श्रद्धा व प्रेम से १४-१५ लोगों की रसोई बनायी थी परंतु १०० लोग आ गये, मैं तो घबरा गयी।

आश्रम के शंकरभाई को मैंने बोला : ''इतने सारे लोगों को हम क्या खिलायेंगे ? हमने तो १४-१५ लोगों का भोजन बनाया है। अब १०० लोगों की रसोई तुरंत कैसे बना पाऊँगी ?''

बापूजी को पता चला तो उन्होंने मुझसे पूछा : ''तूने क्या बनाया है ?''

''बापू ! दाल-भात, सब्जी-रोटी।''

''दिखाओ।''

ढक्कन खोल के दिखाया तो बापूजी ने सब्जी, दाल, चावल में चम्मच घुमाया, फिर बोले : ''परोसो, नहीं खूटेगा।''

केवल १४-१५ लोगों का भोजन था परंतु आश्चर्य, मैं परोसती गयी और वह खूटा ही नहीं। सभी १०० लोगों के लिए पर्याप्त भोजन हो गया, कुछ भी कम नहीं पड़ा !

यह चमत्कार नहीं तो और क्या है ?

मैंने बचपन में एक सिद्ध महापुरुष के जीवन पर बनी पिक्चर देखी थी। पहले जब मैं ब्रह्मज्ञान की, आत्मज्ञानी महापुरुष की अनंत, अपार महिमा नहीं जानती थी, तब लगभग सन् १९८६ में मैं पूज्यश्री की तस्वीर के सामने बोली : ''बापू ! उन सिद्ध महापुरुष ने तो बहुत चमत्कार किये, आप तो कोई चमत्कार करते ही नहीं ! कितनी श्रद्धा से हम आपके पीछे भागते हैं !'' मैं भाव में आकर थोड़ा रोने लगी।

इतने में मेरा देवर दौड़ता हुआ आया : ''भाभी ! तुम्हारा फोन आया है।'' (उस समय मोबाइल नहीं थे, लैंडलाइन फोन थे।)

ऊपर जाकर मैं फोन पर बोली : ''हरि ॐ !''

सामने से आवाज आयी : ''जय जय !''

मैंने कहा : ''बापू !...''

''अरे 'बापू-बापू' क्या करती है ? पूछो कि 'बापू ! कहाँ से बोल रहे हो ?' मैं तापी नदी के तट से बोल रहा हूँ। तुमने मेरे को बुलाया था न ?''

''नहीं, मैंने नहीं बुलाया।''

''अरे, कितना बुलाया ! तभी तो मेरे को फोन करना पड़ा। तो क्या यह चमत्कार नहीं है ?''

''हाँ बापू ! मैं मान गयी।''

भयंकर बाढ़ का पानी नीचे उतर गया

लगभग सन् १९७९-८० में इतनी बरसात हुई कि साबरमती नदी में बाढ़ आ गयी और पानी ऊपर तक आ गया। भक्तों ने शांति कुटिया में जाकर बापूजी को बताया।

पूज्यश्री आये और बोले : ''इसमें क्या बड़ी बात है ! लाओ, दही लाओ। चलो, एक-दो चम्मच मेरे अँगूठे पर डालो !'' बापूजी ने दही लगे अँगूठे से पानी को स्पर्श किया तो जो पानी तेज गति से बढ़ता जा रहा था वह जादुई ढंग से घटता चला गया। पहले नदी की धारा आश्रम से सटकर बहती थी पर इसके बाद वह दूर चली गयी।

आत्मज्ञान के साथ विनोद भी भरपूर

सन् १९८०-८१ में नारेश्वर (गुज.) में पूज्य बापूजी के सान्निध्य में एक बड़ा ध्यानयोग शिविर हुआ था। उसमें हमारे गाँव से ४ बस भर के लोग गये थे। उस शिविर में लालजी महाराज भी पधारे हुए थे। पूज्य बापूजी और वे मित्रसंत थे। दोनों में परस्पर खूब प्रेम था।

लालजी महाराज दिनभर मौन रखते, केवल १ घंटे के लिए रात को ९ बजे मौन खोलते थे। उनके पास घड़ी रखी रहती थी, १ घंटा पूरा होते ही वे दुबारा मौन हो जाते थे।

जब लालजी महाराज सत्संग करते और बापूजी साथ में बैठे होते तो १० बजने के पहले ही बापूजी युक्ति से घड़ी लेकर काँटा घुमा देते थे, घड़ी में दुबारा ९ बज जाते, १० पर काँटा जाता ही नहीं था। तो लालजी महाराज बोले : ''अरे आशाराम ! क्या करते हो ? समय नहीं हो रहा है, जादू करते हो क्या ?'' इस प्रकार बापूजी लालजी महाराज के साथ बहुत विनोद करते थे। फिर बापूजी उनका हाथ पकड़ के नदी में ले जाते घूमने के लिए, वहाँ भी खूब विनोद करते।

जल्दी आत्मसाक्षात्कार कर लो !

एक बार मैंने 'श्री योगवासिष्ठ महारामायण' खरीदा था, उस पर हस्ताक्षर करवाने के लिए बापूजी के पास गयी । पूज्यश्री ने उसमें हस्ताक्षर तो किये, साथ ही लिखा : 'शारदा देवी ! जल्दी सुधरो ।' और कहा : ''आत्मसाक्षात्कार कर लो ! आत्मानंद में मस्त रहो।''

बचु भाई (शारदा देवी के पतिदेव) ग्रंथ ले गये तो उसमें हस्ताक्षर करके पूज्यश्री ने लिखा : 'यह ग्रंथ पढ़कर मौन हो जाओ।' कुछ समय बाद वे गृह-त्याग कर आश्रम में ही आ गये और बचु भाई से बालानंद महाराज बन गये।

एक जन्म में ही दो जन्म काट दिये

एक बार रक्षाबंधन था तो मैं जैसे ही राखी ले के बापूजी के पास गयी तो वे बोले : ''मेरे को क्या राखी बाँधती है ? जा, बालानंद को बाँध !''

मैं एकदम विस्मित रह गयी। बापूजी ने दुबारा कहा : ''बालानंद को राखी बाँध के फिर मेरे पास आओ दोनों लोग।''

मैं तो गयी काका के पास, बोली : ''लाओ हाथ, राखी बाँधनी है।''

काका बोले : ''मेरे को क्यों राखी बाँध रही है ?''

''बापूजी ने बोला है।''

तो उन्होंने राखी बँधवा ली। फिर मैंने कहा : ''चलो, बापू बुला रहे हैं।''

पूज्यश्री के पास आये तो वे एकदम चौंककर बोले : ''यह क्या किया ! मैंने तो विनोद किया था। तुमने तो सच में राखी बाँध दी।''

मैंने कहा : ''जी बापू !''

फिर बापूजी माइक चालू करके बोले : ''चलो, नारायण की माँ को बुलाओ। वह भी मेरे को राखी बाँधेगी।''

पूरे सत्संग-पंडाल में सन्नाटा छा गया।

मैंने कहा : ''नहीं बापू ! ऐसा नहीं करिये। मेरे को तो गुरुआज्ञा थी इसलिए मैंने बाँध दी।''

फिर बापूजी ने सत्संगियों से कहा : ''इनमें मैंने भाई-बहन का संबंध करवा दिया, राखी बँधवा दी। यह कितनी मजबूत माई है, जोगन है, बहादुर है ! इनका जीवन सुधर गया।''

बाद में पूज्यश्री बोले : ''देखो, इस जन्म में इनका पति-पत्नी का संबंध था लेकिन (शेष पृष्ठ २३ पर)

भगवान के नाम की महिमा जितनी भी गायी जाय कम है । वह अकथनीय और अनंत है । भगवन्नाम के जप से, कीर्तन से भाग्य के कुअंक बदल जाते हैं - मेटत कठिन कुअंक भाल के । (रामायण) नया प्रारब्ध बन जाता है, जो वस्तु न मिलनेवाली हो वह भी मिल सकती है, जो असम्भव है वह भी सम्भव हो जाता है - ऐसा संतों-महापुरुषों का अनुभव है ।

साङ्केत्यं पारिहास्यं वा स्तोभं हेलनमेव वा ।
वैकुण्ठनामग्रहणमशेषाघहरं विदुः ॥...

'बड़े-बड़े महात्मापुरुष यह बात जानते हैं कि संकेत में (किसी दूसरे अभिप्राय से), परिहास में, तान आलापने में अथवा किसीकी अवहेलना करने में भी यदि कोई भगवान के नामों का उच्चारण करता है तो उसके पाप नष्ट हो जाते हैं ।

जो मनुष्य गिरते समय, पैर फिसलते, अंग-भंग होते समय और साँप के डसते, आग में जलते अथवा चोट लगते समय भी विवशता से 'हरि-हरि' कहकर भगवन्नाम का उच्चारण कर लेता है वह यम-यातना का पात्र नहीं रह जाता ।'

(श्रीमद्भागवत : ६.२.१४-१५)

कोई कहे कि 'भगवन्नाम-जप में मन नहीं लगता और मन लगे बिना जप करने से कुछ फायदा नहीं ! कहा भी गया है :

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरै मुख माहिं ।
मनुवाँ तो चहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं ॥'

मन नहीं लगेगा तो 'सुमिरन' (स्मरण) नहीं होगा - यह बात सच है पर भगवन्नाम-जप नहीं होगा यह बात दोहे में नहीं कही गयी है । सुमिरन नहीं होगा तो नहीं सही पर नाम-जप तो हो ही जायेगा ! भगवन्नाम या गुरुमंत्र का जप कभी व्यर्थ नहीं जाता । अतः मन लगे-न लगे, जप करते रहना चाहिए ।

श्री रामचरितमानस (बा.कां. : २५.३) में आता है : 'ध्रुव ने ग्लानि से (सौतेली माँ के वचनों से दुःखी होकर सकाम भाव से) भगवन्नाम जपा और उसके प्रताप से अचल अनुपम स्थान (ध्रुवलोक) प्राप्त किया । हनुमानजी ने भगवन्नाम का स्मरण करके श्रीरामजी को अपने वश में कर रखा है ।'

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका ।

भए नाम जपि जीव बिसोका ।।

बेद पुरान संत मत एहू ।

सकल सुकृत फल राम सनेहू ।।...

'चारों युगों में, तीनों कालों में और तीनों लोकों में भगवन्नाम को जपकर जीव शोकरहित हुए हैं । वेद, पुराण और संतों का यही मत है कि समस्त पुण्यों का फल भगवान में प्रेम होना है ।

ऐसे कराल काल (कलियुग) में तो भगवन्नाम ही कल्पवृक्ष है, जो स्मरण करते ही संसार के सब जंजालों का नाश करनेवाला है । यह कलियुग में मनोवांछित फल देनेवाला है, परलोक का परम हितैषी और इस लोक का माता-पिता है । (अर्थात् परलोक में भगवान का परम धाम देता है और इस लोक में माता-पिता के समान सब प्रकार से पालन और रक्षण करता है ।)'

(श्री रामचरित. बा.कां. : २६.१, ३)

अपने को बुद्धिमान समझनेवाले कुछ लोग तर्क देते हैं कि गुड़ का नाम लेने से मुख मीठा नहीं होता, फिर भगवान का नाम लेने से क्या होगा ?

सरल-सी बात है कि जब तक गुड़ का जीभ के साथ संबंध नहीं होता, तब तक मुख मीठा नहीं होता क्योंकि गुड़ के नाम में गुड़ मौजूद नहीं है । ऐसे ही धनी का नाम लेने से धन नहीं मिलता क्योंकि धनी के नाम में धन मौजूद नहीं है परंतु भगवान के नाम में भगवान मौजूद हैं । नामी (भगवान) से नाम अलग नहीं है ।

भगवन्नाम में एक विलक्षणता है कि मनुष्य बिना श्रद्धा-भाव के भी हरदम जप करता रहे तो उसके सामने नाम की शक्ति प्रकट हो जायेगी पर उसमें समय लग सकता है ।

भगवन्नाम या गुरुमंत्र में मन न लगने से, इष्ट के ध्यानसहित भगवन्नाम-जप न करने से, हृदय से नाम को महत्त्व न देने आदि-आदि दोषों के कारण नाम का माहात्म्य शीघ्र देखने में नहीं आता । हाँ, किसी प्रकार से जप मुख से चलता रहे तो उससे भी लाभ होता ही है । मन लगे चाहे न लगे पर जप निरंतर चलता रहे, कभी छूटे नहीं तो नाम महाराज की कृपा से सब काम हो जायेगा । अपने कमरे की दीवाल पर एक वाक्य इस तरह से लिख देना चाहिए कि उस पर आते-जाते दृष्टि पड़ती रहे, 'गुरुमंत्र का मानसिक जप चल रहा है न ?' चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जगते जप करते रहना चाहिए ।

भगवान का नाम बालक, स्त्री, पुरुष, वृद्ध, रोगी - सभी ले सकते हैं और हर समय, हर परिस्थिति में ले सकते हैं; उसमें कोई विधि-विधान नहीं है । भगवन्नाम-जप एक सम्बोधन है, पुकार है । उसमें आर्तभाव की ही मुख्यता है, विधि की मुख्यता नहीं है । अतः प्रत्येक मनुष्य आर्तभाव से भगवान को, गुरु को पुकार सकता है ।

भगवन्नाम-जप से ज्ञात, अज्ञात सभी पापों का प्रायश्चित हो जाता है, सभी पाप नष्ट हो जाते हैं । नाम-जप पर श्रद्धा-विश्वास न होने से ही शास्त्रों में तरह-तरह के प्रायश्चित बताये गये हैं । अगर गुरुमंत्र के जप में पूर्ण श्रद्धा हो जाय तो दूसरे प्रायश्चित करने की कोई जरूरत नहीं है ।

भगवत्प्रीति व भगवत्प्राप्ति का लक्ष्य मुख्य रहने से नाम चिन्मय हो जाता है, फिर उसमें क्रिया नहीं रहती । इतना ही नहीं, वह चिन्मयता जापक में भी उतर आती है अर्थात् भगवन्नाम या गुरुमंत्र जपनेवाले का शरीर भी चिन्मय हो जाता है । उसके शरीर की जड़ता मिट जाती है, जैसे तुकारामजी महाराज

(शेष पृष्ठ २३ पर)

(संत कबीरजी जयंती : २० जून)

हृदय की बात जाननेवाला सत्‌शिष्य

पंचगंगा घाट पर सभी संत आध्यात्मिक चर्चा कर रहे थे । अंदर गुफा में बैठ के स्वामी रामानंदजी मानसिक पूजा कर रहे थे । वे पूजा की सभी सामग्री एकत्र कर नैवेद्य आदि सब चढ़ा चुके थे । चंदन मस्तक पर लगाकर मुकुट भी पहना चुके थे परंतु माला पहनाना रह गया था । मुकुट के कारण माला गले में जा नहीं रही थी । स्वामीजी कुछ सोच रहे थे ।

इतने में रामानंदजी के शिष्य कबीरजी को गुरुदेव के हृदय की बात मालूम पड़ गयी और वे बोल उठे : ''गुरुदेव ! माला की गाँठ को खोलकर फिर उसे गले में बाँध दिया जाय ।''

कबीरजी की युक्तिभरी बात सुनकर रामानंदजी चौंके कि 'अरे, मेरे हृदय की बात कौन जान गया ?' स्वामीजी ने वैसा ही किया । परंतु जो संत बाहर कबीरजी के पास बैठे हुए थे, उन्होंने कहा कि ''कबीरजी ! बिना प्रसंग के आप क्या बोल रहे हैं ?''

कबीरजी ने कहा : ''ऐसे ही एक प्रसंग आ गया था, बाद में आप लोगों को ज्ञात हो जायेगा ।''

पूजा पूरी करने के बाद रामानंदजी गुफा से बाहर आये, बोले : ''किसने माला की गाँठ खोलकर पहनाने के लिए कहा था ?''

सभी संतों ने कहा : ''कबीरजी ने अकस्मात् हम लोगों के सामने उक्त बातें कही थीं ।''

रामानंदजी का हृदय पुलकित हो गया और अपने प्यारे शिष्य कबीरजी को छाती से लगाते हुए बोले : ''वत्स ! तुमने मेरे हृदय की बात जान ली । मैं तुम्हारी गुरुभक्ति से संतुष्ट हूँ । तुम मेरे सत्‌शिष्य हो ।''

गुरुदेव का आशीर्वाद व आलिंगन पाकर कबीरजी भावविभोर हो गये और गुरुदेव के श्रीचरणों में साष्टांग प्रणाम करके बोले : ''प्रभो ! यह सब आपकी महती अनुकम्पा का फल है । मैं तो आपका सेवक मात्र हूँ ।''

इस प्रकार कबीरजी पर गुरु रामानंदजी की कृपा बरसी और वे ब्रह्मज्ञानी महापुरुष हो गये ।

अग्राह्य को भीतर से बाहर निकालो !

कबीरजी ब्रह्मज्ञान का अमृत लुटाने हेतु देशाटन करते थे । एक बार कबीरजी अरब देश पहुँचे । वहाँ इस्लाम धर्म के एक प्रसिद्ध सूफी संत जहाँनीगस्त रहते थे । कबीरजी ने उनका बड़ा नाम सुना तो उनसे मिलने पहुँचे परंतु फकीर ने अपनी महानता के अहंकार के वशीभूत होकर कबीरजी से मुलाकात नहीं की ।

उन फकीर ने सिद्धियाँ तो प्राप्त कर ली थीं परंतु आत्मज्ञान न होने से अहंकार दूर नहीं हुआ था । एक दिन फकीर को रात्रि में स्वप्न आया कि 'किन्हीं हयात महापुरुष के दर्शन-सत्संग के बिना तुम्हारा अज्ञान दूर नहीं होगा । अतः भारत में जाओ और संत कबीरजी के दर्शन करो ।'

जहाँनीगस्त फकीर ने पूछा : 'कौन कबीर ?'

'भारत के कबीर, जिन्होंने सिकंदर लोदी को पराजित किया है और जो तुमसे मिलने आये थे परंतु तुमने अहंकारवश उनसे मुलाकात नहीं की ।'

सुबह उठते ही फकीर स्वप्न की बात पर चिंतन करने लगे कि 'मैं कबीरजी को पहचान न सका । ऐसे महापुरुष मेरे द्वार पर आये और मैंने उनका अपमान कर दिया । इसलिए अल्लाह की ओर से मुझे यह आदेश हुआ है । अब मैं कबीरजी का दर्शन अवश्य करूँगा ।' ऐसा निश्चय करके जहाँनीगस्त अरब से चल पड़े । इधर कबीरजी पहले ही जान गये कि जहाँनीगस्त आ रहे हैं तो उनके बैठने के लिए आसन की व्यवस्था करा दी । साथ ही उन्होंने आश्रम के सामने एक सूअर बँधवा दिया ।

फकीर कबीरजी के आश्रम के निकट पहुँचे । दूर से ही सूअर देखकर उनके मन में घृणा हुई कि 'कबीरजी सूअर को क्यों बाँधे हुए हैं ? वे तो संत हैं, उनको इससे दूर रहना चाहिए ।' इस प्रकार तर्क-वितर्क कर लौटने का विचार करने लगे । संत कबीरजी उनके मनोभाव को जान गये, बोले : ''संतजी ! आइये, क्यों इतनी दूर से आकर वहाँ रुक गये हो ?''

वे कबीरजी के पास आये । थोड़ा विश्राम व भोजन के बाद कबीरजी के साथ सत्संग की चर्चा होने लगी । जहाँनीगस्त ने कबीरजी से पूछा : ''आप बहुत बड़े संत-महापुरुष हैं परंतु आपने इस अग्राह्य को क्यों ग्रहण किया है ?''

कबीरजी बोले : ''जहाँनीगस्तजी ! मैंने अपने अग्राह्य को भीतर से बाहर कर दिया है परंतु आप अभी उसको भीतर ही रखे हुए हैं ।''

''मैं कुछ समझा नहीं !''

''मैंने भेदबुद्धिरूपी सूअर को भीतर से निकालकर बाहर बाँध दिया है परंतु आप उसे अपने अंदर रखे हुए हैं और इस पर भी आप पवित्र बनते हैं । इस सूअर को आप अपने अंदर छिपाकर रखे हुए हैं ।''

यह सुनते ही उन फकीर का सारा भ्रम दूर हो गया । कबीरजी के सत्संग से उनकी अविद्या (जगत को सत्य मानना व अद्वैत परमात्मा को न जानना), अस्मिता (देह को 'मैं' मानना), राग, द्वेष और अभिनिवेश (मृत्यु का भय) अलविदा हो गये ।

जिधर देखता हूँ खुदा ही खुदा है ।
खुदा से नहीं चीज कोई जुदा है ॥
जब अव्वल व आखिर खुदा-ही-खुदा है ।
तो अब भी वही, कौन इसके सिवा है ॥
जिसे तुम समझते हो दुनिया ऐ गाफिल[१] ।
यह कुल हक[२] ही हक, नै जुदा नै मिला है ॥

१. अज्ञानी २. सत्यस्वरूप परमात्मा

(गतांक से आगे)

टीवी चैनल पर २००८ में दिया गया पूज्य बापूजी का संदेश

रामगोपाल वर्मा, प्रस्तोता (होस्ट) : महाराजश्री ! ऐसा नहीं लगता कि अब पाश्चात्य संस्कृति भारतीय संस्कृति पर हावी होना चाहती है ?

पूज्य बापूजी : बिल्कुल यही प्रयास है।

प्रस्तोता : षड्यंत्र रचकर पहले कितने ही साधु-संतों पर आरोप लगाये गये । इसके बाद शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी को और अब पूज्य आशारामजी बापू को फँसाया गया । कोई सोच भी नहीं सकता कि यह हो क्या रहा है, ये कितने आगे तक जायेंगे और क्या भविष्य होगा भारत का !

पूज्यश्री : और जब विश्वप्रसिद्ध संतों पर कलंक लगाने की साजिश करने की उनकी हिम्मत हो रही है तो क्षेत्रीय साधु-संतों को तो निगल ही जायेंगे । हम तो कहते हैं कि भारतवासियों को तोड़नेवाली ताकतें नाकामयाब हों ।

शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी के साथ भी षड्यंत्र रचा गया, मेरा हृदय पीड़ित हुआ कि 'ये झूठे मुकदमे हैं ।'

लोग बोलते थे कि 'इनकी जमानत नहीं हो सकती है, इनको उम्रकैद अथवा तो फाँसी की सजा मिलेगी ।' मेरा हृदय पीड़ित हुआ कि 'साजिश करनेवालो ! तुम क्या कर रहे हो ?' मैं जा के धरने पर बैठा और आज जयेन्द्र सरस्वती बाहर घूम रहे हैं । साजिश में जो भागीदार हुए, उनमें से किसीकी नौकरी गयी, किसीको आपदा आयी, किसीकी सत्ता चली गयी - यह दुनिया जानती है । हम नहीं चाहते कि किसी पार्टी का राज जाय; हम तो चाहते हैं जियो और जीने दो, कंधे-से-कंधा मिलाकर प्रगति करो ।

मेरा किसीसे कोई विरोध नहीं है । मेरे आश्रम में सभी पार्टी, सभी जाति-सम्प्रदाय के लोग आते हैं, फिर भी यह सुनियोजित षड्यंत्र न जाने क्या-क्या करके हावी हो रहा है । ऐसे मौके पर समझदारों को संगठित हो जाना चाहिए और कुप्रचार को सुप्रचार से धो देना चाहिए । जो लोग सुप्रचार करके कुप्रचार को धोते हैं वे ईश्वर के दैवी कार्य के भागीदार माने जाते हैं । एक संत का ही काम नहीं है पूरे समाज को उन्नत करना, रामजी के सेवाकार्य में हनुमानजी लगे, नल-नील लगे, और भी लगे, अंगद लगे, यहाँ तक कि छोटी-सी गिलहरी भी लगी तो अभी वही समय आया है । भारत का छोटे-से-छोटा व्यक्ति और बड़े-से-बड़ा अधिकारी इस समाज-कल्याण के दैवी कार्य में लग जाय । मैं तो कहता हूँ कि बेबुनियाद कुप्रचार से प्रशासन को भी परेशानी पैदा हो जाती है ।

हम जब आपको भी गले लगाकर स्नेह से भारतवासी मान रहे हैं तो आप विदेश में रहकर अथवा यहाँ रह के भारत के पेट में घुसकर भारत के ही पेट में छुरा भोंकने का क्यों पाप करते हैं ! कर्म का विधान है :

करम प्रधान बिस्व करि राखा ।
जो जस करइ सो तस फलु चाखा ॥ (श्री रामचरित. अयो.कां. : २१८.२)

अभी कितने हृदय कराह रहे हैं ! तो ध्यान रखें, कुप्रचार की साजिश के शिकार न हों। कभी अमृतानंदमयी तो कभी सत्य साँईं बाबा तो कभी कोई संत - एक के बाद एक संतों के खिलाफ साजिशें कर रहे हैं और मेरे को कुछ दिन पहले लोगों ने कहा : ''बापूजी ! अब आपकी बारी है। यहाँ-यहाँ तक हुआ है, अब आपकी तरफ साजिश का रुख है।''

मैंने कहा : ''मेरी तो खुली किताब है।''

बोले : ''बापू ! देख लेना।''

तो मैं देख रहा हूँ कितनी घिनौनी साजिश की जा रही है ! हिन्दुस्तान में अशांति फैले ऐसी साजिश की जा रही है। यह साजिश स्पष्ट दिखती है। साजिशवालों से खरीदे गये लोग आश्रम को बदनाम करने में सहभागी हो गये। नाम तो आता है कि अपने ही हिन्दू हैं, अपने ही फलाने हैं लेकिन हिन्दुओं को हिन्दुओं से कैसे भिड़ाना यह साजिशकर्ता अच्छी तरह से जानते हैं। सच्चाई कुछ और होती है। ऐसे तो एक-एक बात का मैं क्या वर्णन करूँगा ! **(क्रमशः)**

(पृष्ठ १९ से 'अनंत और ... ' का शेष) सशरीर वैकुंठ चले गये, संत मीराबाई का शरीर भगवान के विग्रह में समा गया, संत कबीरजी का शरीर अदृश्य हो गया और उसके स्थान पर लोगों को पुष्प मिले। संत चोखामेला की हड्डियों से 'विट्ठल' नाम की ध्वनि सुनाई पड़ती थी। इतना जप करना चाहिए कि सुषुप्त अवस्था में भी हमारे अंतर्मन में जप चलता रहे।

यद्यपि सांसारिक तुच्छ कामनाओं की पूर्ति के लिए भगवन्नाम-जप को खर्च करना बुद्धिमानी नहीं है, फिर भी अगर सकाम भाव से भी नाम-जप किया जाय तो भी नाम का माहात्म्य नष्ट नहीं होगा। साधक को चाहिए कि वह परमात्मप्राप्ति का ध्येय बनाये, अर्थसहित गुरुमंत्र का जप करता जाय और परमात्म-रस में, परमात्म-विश्रांति में, परमात्म-ज्ञान में प्रतिष्ठित होता जाय। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है :

तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता। (गीता : २.५७)

अदीक्षित को सद्गुरु से गुरुमंत्र की प्राप्ति करने हेतु निष्ठापूर्वक भगवन्नाम जपना चाहिए।

(पृष्ठ १९ से 'पूज्य बापूजी के प्रेरक जीवन-प्रसंग ...' का शेष) दूसरा जन्म भाई-बहन का आनेवाला था तो मैंने एक जन्म में ही दो जन्म काट दिये।''

त्रिकालज्ञानी होते हैं ब्रह्मज्ञानी महापुरुष ! पूज्य बापूजी सबको इसी जन्म में आत्मसाक्षात्कार कराकर जन्म-मरण से मुक्त करना चाहते हैं। इसीलिए बापूजी करुणा करके जन्म-मरण से बचाने की लीला कर देते हैं।

वे चाहते सब झोली भर लें,
निज आत्मा का दर्शन कर लें।

(पृष्ठ १५ से 'पूज्य बापूजी के प्रेरक ...' का शेष) पूज्यश्री बोले : ''यह पोटला नीचे रखो। इसमें कोई सार नहीं, इसे छोड़ दो।'' मैंने थैला नीचे रखा। घुटने के दर्द का इलाज बताते हुए पूज्यश्री बोले : ''गोझरण को मटके में भरकर ३-४ सप्ताह तक गड्ढे में गाड़ देना। फिर उसको लगाकर मालिश करना।''

सत्संग के बाद बापूजी ने मेरे पिताजी को मोक्ष कुटीर में बुलाकर मंत्रदीक्षा दी। पिताजी को चलने में तकलीफ थी इसलिए जब हम जाने लगे तो पूज्यश्री स्कूटर से सड़क तक छोड़ के आये।

तीन तार कर देते बेड़ा पार

– पूज्य बापूजी

देवर्षि नारदजी जयंती
२२ मई

महर्षि वेदव्यासजी ने नारदजी से पूछा : ''तुम इतने महान पुरुष कैसे बने कि कभी-कभार भगवान श्रीकृष्ण को भी सलाह देते हो, मुझ जैसे को भी तुम्हारी सलाह ने शांति दी । मैं देख रहा था कि इतने ग्रंथ होने के बाद भी लोग दुःखी हैं और तुमने कहा कि 'भगवद्भाव बने ऐसा 'श्रीमद्भागवत' लिखो ।' मैंने लिखा तो मुझे शांति मिली और लोगों को भगवद्रस मिला । तुम्हारी इतनी महानता का क्या रहस्य है ?''

देवर्षि नारदजी कहते हैं : ''पिछले जन्म में मैं एक दासी का पुत्र था। मेरे पिता मर गये थे, मैं ५ साल का था । नगर में चतुर्मास के लिए संत आये । किसी ब्राह्मण ने मेरी माँ को वहाँ सत्संग की सेवा में रख दिया । एक तो मेरी माँ अनपढ़ थी, दूसरा गरीब थी, तीसरी बात दासी थी और चौथी बात मेरे प्रति उसका मोह था इसलिए वह जब काम करने जाती तो मेरे को ले जाती । इस प्रकार मैं सत्संग में जा बैठा । सत्संग के सात्त्विक आंदोलनों ने, कीर्तन ने मेरे रक्त के कणों को पवित्र किया । संत के दर्शन ने मेरी आँखों को पवित्र किया तथा संत की वाणी ने मेरे कानों को पवित्र करके मेरे हृदय को पवित्र किया और मेरे को सत्संग में रस, आनंद आने लग गया ।''

जब सत्संग में रस आने लगे, आनंद आने लगे तो समझो पुण्य उदय हुए हैं । जो आदमी जैसा है, उसके शरीर से वैसे ही आंदोलन और तरंगें निकलती हैं।

कामी आदमी है तो उसके इर्दगिर्द काम की तरंगें निकलती रहती हैं । वहाँ आप जाओ तो आपके भी विचार वैसे हो जायेंगे । लेकिन जो आत्मशांति पाते हैं, परमात्मा में विश्रांति पाते हैं, उनके चारों ओर उसी प्रकार का आभामंडल बन जाता है । पापी-से-पापी, चंचल-से-चंचल, दुःखी-से-दुःखी लोग भी संत के उस आभामंडल में, परिधि में आ जाते हैं तो पापी के पाप पलायन होने लगते हैं, चंचल की चंचलता मिटने लगती है, दुःखी के दुःख मिटने लगते हैं, चिंतित की चिंताएँ मिटने लगती हैं । जहाँ संत की दृष्टि पड़ती है, जहाँ वाणी पहुँचती है वहाँ के लोगों का तन, मन और जीवन पवित्र होने लगता है यह सत्संग की महिमा है । ठीक ही कहा गया है :

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध ।
तुलसी संगत साध की, हरे कोटि अपराध ।।

नारदजी कहते हैं : ''मैं तो दासी का पुत्र था, मुझे पता नहीं था कि इतना पुण्य होता है, इतनी शांति मिलती है, इतना लाभ होता है लेकिन मेरा संतों के प्रति मन खिंचने लगा । जब संत जाने लगे तो मैंने उनके चरणों में प्रार्थना की : ''मेरे को आप साथ में ले चलो ।''

संतों ने कहा : ''नहीं बेटा ! अभी तुम बच्चे हो, माँ के साथ रहो । तुम्हारा प्रारब्ध शेष है । यह लो प्रसाद, तुम्हारा नाम आज से 'हरिदास' रखते हैं ।''

मेरी माँ मेरे को भजन करने से टोकती थी तो संतों ने कहा : ''जो टोकती है उसका मन भगवान बदल देंगे, अगर मन नहीं बदला तो उसका तन बदल देंगे, उसको भगवान अपने चरणों में बुला लेंगे ।'' ईश्वर के रास्ते जानेवाले को रोकने-टोकनेवालों को ही घाटा पड़ता है।

महाराज ! मेरे को गुरुमंत्र देकर संत तो चले गये और मैं मंत्र जपता रहा। मेरी माँ मुझे रोकती-टोकती थी। एक दिन माँ गौशाला में गयी। रास्ते में साँप ने काटा और वह मर गयी। मैंने माँ की अंत्येष्टि करवायी फिर उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा। हालाँकि मुझे मार्ग का पता नहीं था लेकिन जिसको सब पता है, उस परमेश्वर को हाथ जोड़कर मैं चलने लगा। चलते-चलते कहीं छोटे गाँव, कहीं बड़े गाँव तो कहीं पहाड़ी, कहीं बड़े-बड़े नगर आये - ऐसी यात्रा करते-करते एक घने जंगल में पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर मैं गुरुमंत्र जप रहा था। मन में सोचा कि 'भगवान कब मिलेंगे ? तुम मेरे अंतरात्मा हो...'

सत्संग व गुरुमंत्र के कारण कभी कंठ भर आना, कभी हृदय गद्‌गद हो जाना, कभी नृत्य होना, कभी रुदन होना - इस प्रकार के अष्टसात्त्विक भाव मेरे में जगने लगे, मुझे इसका पता ही नहीं था।''

भगवान श्रीकृष्ण उद्धव से कहते हैं :

वाग् गद्‌गदा द्रवते यस्य चित्तं
रुदत्यभीक्ष्णं हसति क्वचिच्च ।
विलज्ज उद्‌गायति नृत्यते च
मद्‌भक्तियुक्तो भुवनं पुनाति ।।

(श्रीमद्‌भागवत : ११.१४.२४)

कभी वाणी गद्‌गद हो जाती है, कभी कंठ भर आता है, कभी लज्जा छोड़कर नाचने लगता है तो कभी रोने लगता है, ऐसा भक्तियुक्त मेरा भक्त त्रिभुवन को पवित्र करता है। उसको छूकर आनेवाली हवा भी लोगों को पावन करती है।

नारदजी महर्षि वेदव्यासजी से कहते हैं : ''ऐसा मुझे हुआ और प्रकाश हुआ। फिर आकाशवाणी हुई कि 'पुत्र ! मैं तुझे इस जन्म में नहीं मिल सकता परंतु अगले जन्म में तू मेरा खास पार्षद होगा।'

महाराज ! कहाँ तो मैं एक दासीपुत्र ! दासी भी ऐसी जिसकी पक्की नौकरी नहीं, दिहाड़ी मिलती थी कभी किधर-कभी किधर, कभी दिहाड़ी भी न मिले। मैं जाति से छोटा, उम्र से छोटा, बलहीन, विद्याहीन, धनहीन लेकिन मेरे जीवन में तीन तार आ गये। एक तो सत्संग मिला, दूसरा संतों के प्रति श्रद्धा मिली और तीसरा गुरुमंत्र मिला - इन तीन तारों ने मुझे देवर्षि नारद बना दिया।''

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए इस अंक को ध्यानपूर्वक पढ़िये। उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

(१) जब .... में रस आने लगे, आनंद आने लगे तो समझो पुण्य उदय हुए हैं।
(२) .... को छूकर आनेवाली हवा तन-मन व आध्यात्मिकता के लिए बहुत लाभप्रद होती है।
(३) .... से भूख-प्यास व उच्च रक्तचाप (क्रमशः इ.झ.) पर नियंत्रण प्राप्त होता है।
(४) अगर .... में पूर्ण श्रद्धा हो जाय तो दूसरे प्रायश्चित करने की कोई जरूरत नहीं है।
(५) अधिकांश बाजारू सिंदूर या कुमकुम .... से बनाये जाते हैं।

गुरु मंत्र देते हैं। उसका मनन करने से व्यक्ति भगवान और गुरु के अनुभव में तन्मय, एकाकार हो जाता है।

देश व समाज की सेवा है पर्यावरण-सुरक्षा

(विश्व पर्यावरण दिवस : ५ जून)

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''अपने घरों, इलाकों में तुलसी, आँवला, पीपल, नीम और बरगद के वृक्ष लगें ऐसा प्रयत्न सभीको करना चाहिए। इनमें पीपल, आँवला व तुलसी अति हितकारी हैं। पीपल लगाने की आप वन विभाग को सलाह देना, उत्साह देना तो मैं समझूँगा आपने भगवान की भी सेवा की, समाज की भी सेवा की और मेरे पर बड़ा एहसान किया।

बोले, 'महाराज ! पीपल की भारी महिमा है लेकिन लगाने में असुविधा होगी। कब बीज वृक्ष हो ?...' इसलिए हमने प्रयोग किया, जैसे और कलम लगाते हैं ऐसे ही पीपल की कलम हमने लगवायी और सफल गयी। हमने अपने आश्रम के पास की सड़कों पर तथा और भी कई जगहों पर बहुत-से पीपल के पेड़ लगवाये हैं।''

कलम लगाने की आसान विधि

चित्र १

सबसे पहले पीपल की आठ-दस फीट लम्बी व सीधी डाली चुनें। डाली के निचले भाग को एक से डेढ़ इंच तक छील देंगे। डाली की केवल ऊपर की छाल ही निकालें। (देखें चित्र १)

मिट्टी, देशी खाद या केंचुआ खाद और लकड़ी का बुरादा समान मात्रा में मिला दें। थोड़ा-सा पानी डाल के गीला कर लें। छीले हुए भाग पर इस मिश्रण को लगा दें। (देखें चित्र २) ऊपर से पॉलीथीन बाँधकर पतली रस्सी से कस के बाँधें ताकि इसे कोई जीव-जंतु हानि न पहुँचाये। लगभग एक माह तक इसी तरह बँधा रहने दें। (देखें चित्र ३)

यह कार्य जून-जुलाई माह में करें ताकि वर्षा होने तक इसमें जड़ें निकल आयें और जुलाई-अगस्त में इस कलम को जमीन में लगाया जा सके। एक माह बाद इसमें जड़ें निकल आयेंगी। तब बाँधे हुए भाग के नीचे से डाली को काटकर मूल शाखा से अलग कर दें। इसे आप चाहें तो तुरंत लगा सकते हैं या बड़ी थैली में मिट्टी भरकर उसमें सुरक्षित

रख सकते हैं। इसे अन्य स्थान पर भी भेज सकते हैं।

तीन फीट गोलाई व तीन फीट गहराईवाला गड्ढा खोदकर इसे लगा दें। गड्ढे को मिट्टी, खाद से भर दें। खाद-पानी देते रहें। सुरक्षा की दृष्टि से काँटों या तार की बाड़ लगा दें। लीजिये, १ माह में १० साल का पीपल वृक्ष तैयार है!

इस तरह से आप अपने-अपने घरों, मोहल्ले, गाँव या मंदिर आदि की पश्चिम दिशा में पीपल के वृक्ष लगा सकते हैं और पर्यावरण की सुरक्षा करके देश व समाज की सेवा का पुण्य कमा सकते हैं। पीपल को छूकर आनेवाली हवा तन-मन और आध्यात्मिकता के लिए बहुत लाभप्रद होती है।

चित्र ३

कई राज्य सरकारें इस मामले में सराहनीय प्रयास कर रही हैं। अन्य राज्य भी इस प्रयास का अनुकरण कर पर्यावरण के शुद्धीकरण की सेवा कर सकते हैं। तुलसी, पीपल, आँवला, नीम तथा बरगद पवित्रता, शुद्धता, उपयोगिता और औषधीय गुणों से भरपूर हैं, अतः इनके रोपण हेतु अधिक-से-अधिक लोगों को प्रोत्साहित करना चाहिए। नीलगिरी (सफेदा) भूलकर भी नहीं लगायें, यह हानिकारक है।

यदि चाह न रह जाये...

चित में यदि चाह न रह जाये,
फिर कुछ दुःखदाह न रह जाये।
हम ऐसे हो जायें ज्ञानी,
फिर रहें न किंचित् अभिमानी।
बन जायें सब कुछ के दानी,
भव सिंधु अथाह न रह जाये॥
सब भाँति सदा संतोष रहे,
मन बुद्धि सदा निर्दोष रहे।
सोहं सत्योहं घोष रहे,
कुछ भी परवाह न रह जाये॥
जग के वैभव धन पाने का,
शासन अधिकार बढ़ाने का।
फिर किसी ओर भी जाने का,
कुछ भी उत्साह न रह जाये॥
अपने उर का छल मल धोकर,
सब भेद भावना को खोकर।
हम 'पथिक' रहें तुममय होकर,
दुर्गति की राह न रह जाये॥

- संत पथिकजी

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२१ मई : उज्जैन कुम्भ का तृतीय शाही स्नान (मुख्य स्नान)

२९ मई : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से सुबह ६-२० तक)

१ जून : अपरा एकादशी (बहुत पुण्य प्रदान करनेवाला और बड़े-बड़े पातकों का नाश करनेवाला व्रत।)

९ जून : गुरुपुष्यामृत योग (सूर्योदय से सुबह ७-३२ तक)

१४ जून : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : दोपहर १२-३९ से सूर्यास्त तक) (किये गये जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल ८६,००० गुना होता है। - पद्म पुराण)

१६ जून : निर्जला एकादशी (इसके व्रत से अधिक मास सहित २६ एकादशियों के व्रतों का फल प्राप्त होता है। आयु, आरोग्य की वृद्धि होती है। इस दिन किया गया स्नान, दान, जप, होम आदि अक्षय होता है।)

२० जून : दक्षिणायन आरम्भ (पुण्यकाल : सूर्योदय से सूर्यास्त तक) किया गया जप-ध्यान व पुण्यकर्म कोटि-कोटि गुना अधिक व अक्षय होता है। - पद्म पुराण

भगवान को सौंपकर निर्भार हो जाओ !

एक साधु भिक्षा लेने एक घर में गये। उस घर में माई भोजन बना रही थी और पास में बैठी उसकी लगभग ८ वर्ष की पुत्री बिलख-बिलखकर रो रही थी। साधु का हृदय करुणा से भर गया, वे बोले : ''माता ! यह बच्ची क्यों रो रही है ?''

माँ भी रोने लगी, बोली : ''महाराजजी ! आज रक्षाबंधन है। मुझे कोई पुत्र नहीं है। मेरी बिटिया मुझसे पूछ रही है कि 'मैं किसके हाथ पर राखी बाँधूँ ?' समझ में नहीं आता कि मैं क्या उत्तर दूँ, इसके पिताजी भी नहीं हैं।''

साधु ऊँची स्थिति के धनी थे, बोले : ''हे भगवान ! मैं साधु बन गया तो क्या मैं किसीका भाई नहीं बन सकता !'' बालिका की तरफ हाथ बढ़ाया और बोले : ''बहन ! मैं तुम्हारा भाई हूँ, मेरे हाथ पर राखी बाँधो।''

साधु ने राखी बँधवायी और लीला नामक उस बालिका के भाई बन गये। लीला बड़ी हुई, उसका विवाह हो गया। कुछ वर्षों बाद उसके पेट में कैंसर हो गया। अस्पताल में लीला अंतिम श्वास गिन रही थी। घरवालों ने उसकी अंतिम इच्छा पूछी।

लीला ने कहा : ''मेरे भाईसाहब को बुलवा दीजिये।''

साधु महाराज ने अस्पताल में ज्यों ही लीला के कमरे में प्रवेश किया, त्यों ही लीला जोर-जोर से बोलने लगी : ''भाईसाहब ! कहाँ है भगवान ? कह दो उसे कि या तो लीला की पीड़ा हर ले या प्राण हर ले, अब मुझसे कैंसर की पीड़ा सही नहीं जाती।''

लीला लगातार अपनी प्रार्थना दोहराये जा रही थी। साधु महाराज लीला के पास पहुँचे और उन्होंने शांत भाव से कुछ क्षणों के लिए आँखें बंद कीं, फिर अपने कंधे पर रखा वस्त्र लीला की तरफ फेंका और बोले : ''जाओ बहन ! या तो प्रभु तुम्हारी पीड़ा हर लेंगे या प्राण ले लेंगे।''

उनका बोलना, वस्त्र का गिरना और लीला का उठकर खड़े हो जाना - सब एक साथ हो गया। लीला बोल उठी : ''कहाँ है कैंसर ! मैं एकदम ठीक हूँ, घर चलो।''

लीला की जाँच की गयी, कैंसर का नामोनिशान नहीं मिला। घर आकर साधु ने हँसकर पूछा : ''लीला ! अभी मर जाती तो ?''

लीला बोली : ''मुझे अपने दोनों छोटे बच्चों की याद आ रही थी, उनकी चिंता हो रही थी।''

''इसलिए प्रभु ने तुम्हें प्राणशक्ति दी है, बच्चों की सेवा करो, बंधन तोड़ दो, मरने के लिए तैयार हो जाओ ।'' ऐसा कहकर साधु चले गये ।

लीला सेवा करने लगी, बच्चे अब चाचा-चाची के पास अधिक रहने लगे । ठीक एक वर्ष बाद पुनः लीला के पेट में पहले से जबरदस्त कैंसर हुआ, वही अस्पताल, वही वार्ड, संयोग से वही पलंग ! लीला ने अंतिम इच्छा बतायी : ''मेरे भाईसाहब को बुलाइये ।''

साधु बहन के पास पहुँचे, पूछा : ''क्या हाल है ?''

लीला एकदम शांत थी, उसने अपने भाई का हाथ अपने सिर पर रखा, वंदना की और बोली : ''भाईसाहब ! मैं शरीर नहीं हूँ, मैं अमर आत्मा हूँ, मैं प्रभु की हूँ, मैं मुक्त हूँ...'' कहते-कहते ॐकार का उच्चारण करके लीला ने शरीर त्याग दिया ।

लीला के पति दुःखी होकर रोने लगे । साधु महाराज उन्हें समझाते हुए बोले : ''भैया ! क्यों रोते हो ? अब लीला का जन्म नहीं होगा, लीला मुक्त हो गयी ।'' फिर वे हँसे और दुबारा बोले : ''हम जिसका हाथ पकड़ लेते हैं, उसे मुक्त करके ही छोड़ते हैं ।''

पति का दुःख कम हुआ । उन्होंने पूछा : ''महाराज ! गत वर्ष लीला तत्काल ठीक कैसे हो गयी थी, आपने क्या किया था ?''

''गत वर्ष लीला ने बार-बार मुझसे पीड़ा या प्राण हर लेने के लिए प्रभु से प्रार्थना करने को कहा । मैंने प्रभु से कहा : 'हे भगवान ! अब तक लीला मेरी बहन थी, इस क्षण के बाद वह आपकी बहन है, अब आप ही सँभालिये ।' प्रभु पर छोड़ते ही प्रभु ने अपनी बहन को ठीक कर दिया । यह है प्रभु पर छोड़ने की महिमा !''

इंसाँ की अज्म से जब दूर किनारा होता है ।

तूफाँ में टूटी किश्ती का
एक भगवान सहारा होता है ।।

ऐसे ही जब आपके जीवन में कोई ऐसी समस्या, दुःख, मुसीबत आये जिसका आपके पास हल न हो तो आप भी घबराना नहीं बल्कि किसी एकांत कमरे में चले जाना और भगवान, सद्गुरु के चरणों में प्रार्थना करके सब कुछ उनको सौंप देना और शांत-निर्भार हो जाना । फिर जिसमें आपका परम मंगल होगा, परम हितैषी परमात्मा वही करेंगे ।

(पृष्ठ १२ से 'परहित ...' का शेष) युधाजित दोनों मारे गये । इस प्रकार जनता को एक सुयोग्य राजा मिला ।

संत-महापुरुषों की कैसी करुणा होती है ! वे समाज की भलाई के लिए किसीकी परवाह नहीं करते, दूसरों के मंगल के लिए बड़ी-से-बड़ी मुसीबतें भी अपने सिर लेने से नहीं झिझकते । शरणार्थी की योग्यता-अयोग्यता को न देखते हुए उसे अपना लेते हैं और अपना अनुभव, ज्ञान, तप और साधना का खजाना दे देते हैं ।

जो संतों के प्रति सद्भाव रखते हैं, उनके ज्ञान को अपने जीवन में उतारते हैं वे अपना कल्याण कर लेते हैं पर जो उनके प्रति दुर्भाव से निंदा करते-करवाते रहते हैं, उन्हें नानकजी ने चेताया है :

संत का निंदकु महा हतिआरा ।। संत का निंदकु परमेसुरि मारा ।।
संत के दोखी की पुजै न आसा ।। संत का दोखी उठि चलै निरासा ।।

संत कबीरजी ने भी सावधान किया है :

कबिरा निंदक ना मिलो, पापी मिलो हजार ।
एक निंदक के माथे पर, लाख पापिन को भार ।।

ढूँढ़ो तो जानें

नीचे महापुरुषों के जीवन की कुछ पहचानें दी जा रही हैं। उनके आधार पर उन महापुरुषों के नाम वर्ग-पहेली में से खोजिये।

(१) वे थे एक तपस्वी राजा, जो विदेह कहलाये। प्रभु-विवाह में बोलो किसके घर दशरथजी आये ?

(२) भक्ति, प्रेम की पावन प्रतिमा वह था रस की खान। भला कौन वह मुसलमान था कान्हा पर कुर्बान ?

(३) वे अंधे थे, महाभक्त थे, कृष्णचरित्र के गायक। कहो कौन वे संतपुरुष जो थे कवियों के नायक ?

(४) वीर शिवाजी जिनके दर्शन करने जाया करते थे। महाराष्ट्र के संतपुरुष वे कौन जो अभंग सुनाया करते थे ?

(५) अकस्मात् हो गये द्रवित जो लखकर क्रौंच-व्यथा को। कहो कौन महर्षि अमर हो गये लिखकर रामकथा को ?

(६) बोलो किसने अपने पति को यम से मुक्त किया था ? बोलो किसने मृत्यु-विजय का शुभ संदेश दिया था ?

(७) ज्ञानी पुरुष कहते हैं उन्हें, वे थे भारत के सम्राट। कौन गोरखनाथजी के चरणों में गये छोड़ राज अरु पाट ?

त	जी	म	त्म	जी	व	दे	म	ना	त	सं	म
द	स	ती	सा	वि	त्री	वि	प	स	सं	रि	ह
र	दा	री	म	ली	र	रा	सा	त	ह	ए	र्षि
सं	र	ह	प	त्रि	ला	क	आ	र्तृ	आ	क	वा
फ	सू	तु	ल	रा	य	जी	भ	ख	ष्ठ	ना	ल्
पा	त	बा	जी	म	रा	जा	ज	न	क	थ	मी
ल	सं	त	तु	का	रा	म	जी	झ	वि	जी	कि
ना	सा	ओ	र	न्ना	वि	र्य	डा	पो	र	गु	जी
ध्या	नं	बा	सू	म	फ	का	रा	इ	स	पा	ड
ज	पू	ड़	अ	आ	स	व	फा	आ	खा	र	फू
स	वृ	गी	ट	ग	शा	जी	भ	त	न	प	पू
गी	यो	म	ग	व	न्ना	म	ज	प	री	ब	श

उत्तर : (१) राजा जनक (२) रसखान (३) संत सूरदासजी (४) संत तुकारामजी (५) महर्षि वाल्मीकिजी (६) सती सावित्री (७) राजा भर्तृहरि

आपके उपकार के ऋण को...

आपके उपकार के ऋण को
चुकाया जा नहीं सकता।
ज्ञान ऐसा दिया तुमने,
भुलाया जा नहीं सकता ॥
यदि गुरुवर नहीं मिलते,
मेरा मुश्किल गुजारा था।
मुखातिब हूँ बुलंदी को,
मैं एक टूटा सितारा था ॥
दिलों पर आप हो आसीन,
हटाया जा नहीं सकता।
आपके उपकार के ऋण को
चुकाया जा नहीं सकता ॥
बड़ी ऊँची गुरु किरपा, बहुत छोटी जुबाँ मेरी।
तुम्हें गुरुवर समझ पाऊँ, ये हस्ती है कहाँ मेरी ॥
आपकी रहमत को शब्दों में सुनाया जा नहीं सकता।
आपके उपकार के ऋण को चुकाया जा नहीं सकता ॥
मेरे सिर पर सदा हो हाथ, तुम्हारी ही इनायत का।
मुझे हो शौक दुनियाँ में, तुम्हारी ही इबादत का ॥
बिना गुरुदेव के जीवन, सजाया जा नहीं सकता।
आपके उपकार के ऋण को चुकाया जा नहीं सकता ॥

- कौशल किशोर शर्मा, कानपुर (उ.प्र.)

शीतली प्राणायाम

लाभ : (१) इसके अभ्यास से अजीर्ण और पित्त की बीमारी नहीं होती ।

(२) यह तापमान-नियमन से संबंधित मस्तिष्क केन्द्रों को प्रभावित करता है । शारीरिक गर्मी को कम करने के लिए इसका अभ्यास लाभप्रद है ।

(३) यह उच्च रक्तचाप (क्ळसह लश्रेव ग्रिीींीश) एवं पेट की अम्लीयता को कम करने में सहायक है ।

(४) यह मानसिक एवं भावनात्मक उत्तेजनाओं को शांत करता है तथा पूरे शरीर में प्राण के प्रवाह को निर्बाध बनाता है ।

(५) इससे मांसपेशियों में शिथिलता आती है तथा मानसिक शांति प्राप्त होती है ।

(६) इससे भूख-प्यास पर नियंत्रण प्राप्त होता है ।

(७) गर्मी के दिनों में पसीना छूटता है या अधिक प्यास लगती है अथवा शरीर में बहुत गर्मी और बेचैनी का अनुभव होता है तो इनका निराकरण इस प्राणायाम से सम्भव है ।

(८) श्रम से उत्पन्न थकान अधिक देर तक नहीं रहती ।

विधि : पद्मासन या सुखासन में बैठकर दोनों हाथ घुटनों पर ज्ञान मुद्रा में रखें । आँखों को कोमलता से बंद करें । जिह्वा को बाहर निकालें और नली के समान मोड़ दें । अब इसमें से ऐसे श्वास अंदर लें, जैसे आप किसी नली से वायु पी रहे हों । श्वास मुड़ी हुई गीली जिह्वा में से गुजरकर आर्द्र व ठंडा हो जाता है । पेट को वायु से पूर्णतया भर लेने के बाद जिह्वा को सामान्य स्थिति में लाकर मुँह बंद कर लें । ठोड़ी को कंठकूप परे पर दबाकर जालंधर बंध करें, योनि का संकोचन करके मूलबंध करें । श्वास को ५ से १० सेकंड तक रोके रखें । बाद में दोनों नथुनों से धीरे-धीरे श्वास छोड़ दें । यह एक शीतली प्राणायाम हुआ । इस प्रकार तीन प्राणायाम करें । धीरे-धीरे इसे ५-७ बार भी कर सकते हैं ।

सावधानियाँ : शीतली प्राणायाम सर्दियों में नहीं करना चाहिए । निम्न रक्तचाप (Low blood pressure) में तथा दमा, खाँसी आदि कफजन्य विकारों में यह प्राणायाम निषिद्ध है ।

इसे अधिक न करें, अन्यथा मंदाग्नि होगी । बिनजरूरी करने से भूख कम हो जायेगी । पित्त और ताप मिटाने के लिए भी ५-७ बार ही करें ।
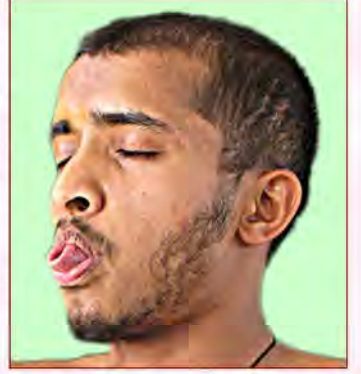
श्रीगुरु अमृतवाणी

शाबाश वीर ! शाबाश ! हिम्मत कर ! साहस जुटा । धैर्य और सावधानी से आगे बढ़ । आने-जानेवाली सफलता और विफलता के पार कोई ऐसा तत्त्व है, ऐसी कोई चीज है कि जहाँ न मृत्यु का भय है, न जन्म का बंधन है, न प्रकृति का प्रभाव है और न अपने परमेश्वरस्वरूप से दूरी है । ऐसे शाश्वत, सनातन स्वरूप को अवश्य पा ले, जान ले और जीते-जी मुक्त हो जा ।

- पूज्य बापूजी

गतांक के 'खेल-खेल में बढ़ायें ज्ञान' के उत्तर

(१) शम (२) दम (३) तितिक्षा (४) उपरति (५) श्रद्धा (६) समाधान

गतांक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) आत्मज्ञान (२) चार (३) ब्रह्मनिष्ठ संत (४) ग्वारपाठा

भगवान के समग्र स्वरूप का बोध हो जाय तो आपको पता चलेगा कि पदार्थों के रूप में भी वह प्यारा ही मिल रहा है। जीवन के रूप में और मृत्यु के रूप में भी वह प्यारा ही मिल रहा है। शांति के रूप में और विक्षेप के रूप में भी मिल रहा है। उस प्यारे की ऐसी कोई चेष्टा नहीं है जो हमारे उत्थान और उन्नति से विरुद्ध हो। जब आँधी और तूफान चलता है तब उसमें भी उस प्यारे की कृपा है। रोग, भुखमरी, महामारी और भयंकर युद्ध होते हैं तो उसमें भी हम लोगों की कुछ-न-कुछ घड़ाई होती है। बोधवान जहाँ दृष्टि डालता है वहाँ उसे वही प्यारा नजर आता है। जलराशि में, विशाल उदधि में भँवर भी तू ही है तो तरंग भी हे जलदेव ! तू ही है। बुलबुले भी तू है और टकराकर छिन्न-भिन्न होनेवाली जल की बूँदें भी तू ही है। अरे, शैवाल तुझीमें बनी है, तुझीमें टिकी है। अब तुझे यार ! हम थोड़ा-थोड़ा जान रहे हैं, तू अंदर और बाहर पूरा-का-पूरा भरपूर है।

नर-नारी में तू ही है इसलिए तेरा एक नाम नारायण भी है और इन तरंगों का साक्षी भी तू ही है इसलिए विष्णुसहस्रनाम के हजार नामों में तेरा एक नाम 'साक्षी' भी है। तू सबमें रम रहा है इसलिए तेरा नाम 'राम' भी रख लिया है ऋषियों ने। तू सबको अपने आनंदस्वभाव में कर्षित-आकर्षित करता है इसलिए तेरा नाम 'कृष्ण' भी है। तेरा नाम 'शिव' भी है और फिर मेरा नाम भी तुझीसे है, तेरा नाम भी मुझीसे है... 'तेरा नाम यह है' - यह भी मुझी चैतन्य से स्फुरता है अर्थात् 'तेरा' और 'मेरा' केवल तरंग है, वास्तव में वही है।

मधुरं मधुरेभ्योऽपि मङ्गलेभ्योऽपि मङ्गलम् ।
पावनं पावनेभ्योऽपि हरेर्नामैव केवलम् ॥

(कैवल्याष्टकम्)

तू मधुर से मधुर है, मंगल से मंगल है, आनंद-आनंद, शांति-शांति, सुख-ही-सुख। 'तू-ही-तू, तू-ही-तू' करते-करते फिर 'तू-ही-तू' करनेवाला खो जाता है, बोलता है : 'मैं-ही-मैं, सोऽहम्, शिवोऽहम्, आनंदोऽहम्, चैतन्योऽहम्, सर्वोऽहम्...'

फिर 'मैं किसीका भला करता हूँ' ऐसा कर्ताभाव भी नहीं रहता। 'मैं किसीकी सेवा करता हूँ ? नहीं, जिसकी कर रहा हूँ उसमें भी मैं ही हूँ। मैं पहले संकीर्ण था साढ़े ५ फीट के शरीर में, अब मैं अनंत हुआ हूँ।' जितनी विशालता आती है, जितनी निष्कामता आती है उतना ही अपने अनंत स्वभाव में तुम जगते हो। जितनी

संकीर्णता आती है उतना ही दुःख, दुःखदायी परिस्थितियाँ, अज्ञानदायी परिस्थितियाँ हम लोग बनाकर परेशान होते हैं। आप खाली हो जाओ, 'मैं फलाना भाई हूँ, फलानी माई हूँ, फलाना सेठ हूँ, दुःखी हूँ, सुखी हूँ।' इन सब कल्पना के आवरणों को उतारकर फेंक दो । हो जाओ निरावरण तत्त्व में जागृत, जग जाओ अपने आत्मभाव में !

ये सब कल्पना के थोथे आवरण ओढ़े हुए हैं। जो कल्पना के थोथे आवरण हैं उनको हटाते जाओ तो एकदम निर्दोष ब्रह्म ! ठंड लगती है तो 'ठंड भी मैं हूँ और लगती है तो शरीर को लगती है, उसको भी देखनेवाला मैं हूँ। ठंड का भाव नहीं। हजारों शरीरों में ठिठुर रहा हूँ तो एक और ज्यादा शरीर में ठिठुर गया तो क्या फर्क पड़ता है ! और हजारों शरीरों ने ओढ़ रखा है तो एक शरीर ने न ओढ़ा, ओढ़ा तो भी क्या फर्क... ! ॐ ॐ...' यह है धर्म, इसको प्रत्यक्ष कर दो।

'मेरा बेटा, मेरा यह...' - इस मोह-माया को छोड़ो। एक बेटा क्या, असंख्य बेटे जिससे पैदा होते हैं, जिसमें लीन होते हैं वह तुम हो। यह तो ऐसा है जैसे सागर में तरंगें पैदा हो के लीन होती हैं। 'मेरे को मिलेगा... न मिले ?' अरे, बिछुड़ा कहाँ है ? तेरा श्वास विराट श्वास से जुड़ा है। तेरा हृदयाकाश विशाल हृदयाकाश से जुड़ा है। तेरा पृथ्वी-तत्त्व पूरी पृथ्वी से जुड़ा है, कोई बिछुड़ा ही कहाँ है ? एक जेब में से उठा के दूसरी जेब में पैसे रखे तो क्या फर्क पड़ा ? एक कोने से उठाकर दूसरे कोने में वस्तु रखी तो क्या फर्क पड़ा ? इधर ही तो है। यह सब अज्ञानजनित, मोहजनित दुःख था। वास्तव में दुःख जैसी कोई चीज ही नहीं है। आनंद-आनंद... मेरा आत्मा-ही-आत्मा...

जैसे जल-ही-जल है, तरंगें दिखती हैं। अब कोई तरंग उत्पन्न होती है तो 'आह ! कितनी सुंदर है।' लीन हो गयी तो 'हाय-रे-हाय ! मेरी तरंग मर गयी।' तरंगें मरी नहीं फिर उठती हैं, पैदा होती हैं। यह आह्लादिनी लीला है। हजारों जन्मों में कई बेटे बने, कई माँएँ बनीं, कई बाप बने, कई चाचे बने, कई मित्र बने, कई शत्रु बने - सब लीन हुए। तुम्हारा क्या बिगड़ा कि अभी बिगड़ जायेगा ? अभी जो लगता है कि बिगड़ रहा है वास्तव में उसमें भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ रहा है। इन सबने अनुभव बताया कि सब आह्लादिनी शक्ति की लीलामात्र है और लीलाधर सच्चा है, मेरे लीलाशाह सच्चे हैं। भगवान का नाम लीलाधर भी रखा है ऋषियों ने। वही लीलाधर है

स्वास्थ्यसंबंधी कहावतें

प्रातः काल खाट से उठकर,
पिये छः अंजलि पानी ।
उस घर वैद्य कबहुं नहीं आये,
बात घाघ[१] ने जानी ॥

आँखें हर्रा दाँते लूंणा[२],
भूखा राखै चौथा कोणा ।[३]

ताता[४] खाय बायाँ सोय,
उसका रोग घर-घर रोय ॥

कम खाना और खूब चबाना,
यही है तंदुरुस्ती का खजाना ।

भोजन करिकें परै उतान,
आठ साँस ताको परिमान ।[५]
सोलह दायें बत्तीस बायें,
तब रस बने अन्न के खायें ॥

जो भोरहिं गौ-दूध पियत है,
अरु मट्ठा भोजन साथ ।
बल बुद्धि तीसे बढ़त है, सबै रोग जरि जात ॥

नींबू आधा काटिये, सेंधा नमक मिलाय ।
भोजन प्रथमहिं चूसिये, सो अजीर्ण मिट जाय ॥

१. बहुत अनुभवी या चतुर व्यक्ति २. आँखों के लिए हरड़ और दाँतों के लिए नमक (सेंधा) हितकर है
३. भोजन के बाद भी पेट में एक चौथाई जगह खाली रखें
४. गर्म-गर्म ५. भोजन करके पीठ के बल लेट के आठ साँस ल

जोधपुर कारागार में बापूजी से मुलाकात के अनमोल क्षण

– नीलम दुबे, मीडिया प्रवक्ता

होली पर्व पर जोधपुर कारागार में पूज्य बापूजी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ । कई घंटों के इंतजार एवं लम्बी कानूनी प्रक्रिया से गुजरने के बाद आखिरकार वह समय आया जब जोर से 'हरि ॐ' की आवाज सुनायी दी और बापूजी हमारे सामने आये । जैसे पहले व्यासपीठ पर पहुँचकर बापूजी पूछा करते थे, ठीक वैसी ही बुलंद आवाज में बापूजी ने हमसे पूछा : ''क्या हाल है ?'' फिर पहले जैसे ही 'जोगी रे...' गुनगुनाया ।

इन सबसे यही आभास हुआ कि हर परिस्थिति में सम रहना तो कोई हमारे बापूजी से सीखे । मेरे साथ मुंबई से एक फिल्म निदेशक भी आये थे, जो बापूजी से मिलकर बड़े हैरान हुए और बोले : ''बापूजी ढाई साल से अधिक समय से जेल में हैं लेकिन हौसला गजब का है !''

एक साधक परिवार ऑस्ट्रेलिया से आया था । वे साधक बार-बार बापूजी से हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहे थे कि ''मेरी छोटी बेटी को मंत्रदीक्षा दे दीजिये, फिर पता नहीं कब भारत आना हो पायेगा ।'' उनकी वह ७-८ साल की बच्ची भी बापूजी के सामने हाथ जोड़े मंत्रदीक्षा के लिए प्रार्थना कर रही थी ।

मंत्रदीक्षा देना तो सम्भव नहीं था लेकिन बापूजी ने उस परिवार की पूरी बातें सुनीं, उन्हें उत्तम साधना का महत्त्व समझाया ।

मैं मन-ही-मन सोच रही थी कि 'यह सब किसी मीडियावाले को क्यों नहीं दिखता ? एक लड़की ने पॉक्सो एक्ट के तहत बापूजी को जेल में बंद करवाया, दूसरी ओर एक नन्ही बच्ची सात समुंदर पार से बापूजी से जेल में आकर मंत्रदीक्षा की प्रार्थना करती है और इसके जैसी देश-विदेश में हजारों-लाखों बच्चियाँ हैं जो बापूजी के दर्शन-सत्संग पाने के लिए लालायित हैं ।' मैंने बाकी सब लोगों को बापूजी से मिलते देखा । पत्थर दिल भी रो देता यह सब देखकर ! एक बिछड़े बच्चे की तरह साधक अपनी माँरूपी बापूजी से मिले । कोई साधक परिवार मुंबई से आया था, कोई दिल्ली से, कोई अमेरिका से, कोई गुजरात से... । एक बहन ने अपनी सारी बातें अपने आँसुओं से ही कह डालीं । बापूजी ने बड़े धैर्य से उसे सुना और सत्संग-वर्षा की ।

एक डॉक्टर दम्पति ने प्रार्थना की : ''बापूजी ! आपकी कृपा से अस्पताल खुल गया है लेकिन हम साधना में तल्लीन होना चाहते हैं । पैसे कमाने की ललक नहीं है, हमें कोई रास्ता बताइये ।'' (शेष पृष्ठ ३५ पर)

आत्मवत् पश्येत् सर्वभूतेषु

एक बार स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज अजमेर (राज.) स्थित फाईसागर के पास ठहरे हुए थे। कोई भक्त उनके लिए मिठाई ले आया। सत्संग पूरा होने के पश्चात् उसने स्वामीजी को मिठाई खाने के लिए निवेदन किया। स्वामीजी ने उस मिठाई को स्वीकार कर सेवाधारी को देते हुए कहा : ''इसे सबमें बाँट दो।''

भक्त बोल पड़ा : ''स्वामीजी ! यह मिठाई तो मैं आपके लिए लाया हूँ, थोड़ी तो खाइये।''

स्वामीजी ने पूछा : ''ये सारे सत्संगी कौन हैं ?''

भक्त सोचने लगा। उसके चेहरे को देखकर प्रतिपल ब्रह्मज्ञान की अलौकिक मस्ती में सराबोर स्वामीजी बोले : ''ये सारे सत्संगी भी मेरा ही स्वरूप हैं। ये सब लीलाशाह हैं। ये मैं ही तो खा रहा हूँ। तुम्हारी मिठाई लीलाशाह ही तो खा रहा है परंतु तुम्हें पता नहीं चला।''

प्राणिमात्र को अपना आत्मस्वरूप अनुभव करनेवाले ऐसे महापुरुषों की हर अदा से आत्मप्रकाश का खजाना खुले हाथों बँटता रहता है। जैसे सूर्यदेव थाली में नहीं समाते, ऐसे ही आप्तकाम पुरुष अपनी देह में नहीं समाते। अनंत-अनंत ब्रह्मांडों में व्याप्त परमात्म-चेतना को 'मैं' रूप में अनुभव करनेवाले ऐसे महापुरुष के श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन !

(पृष्ठ ३४ से 'जोधपुर कारागार में ...' का शेष) बापूजी बोले : ''अरे, माला जपना ही साधना नहीं होती, मानव-समाज की सेवा भी साधना है। अपने अस्पताल के जरिये मानव-समाज की सेवा करो। चंद पैसों के लालच में जच्चा के शरीर की चीरफाड़ करने के बजाय सामान्य प्रसूति (नॉर्मल डिलिवरी) हो तो अच्छा है। बच्चों की सेहत अच्छी रहे, वे तंदुरुस्त हों, तेजस्वी हों, देश और मानव-समाज की ताकत बनें। इस सेवा को ही तुम अपनी साधना समझो।''

फिर मानव-समाज की सेवा का महत्त्व समझाते हुए बापूजी ने सत्संग दिया। तभी मेरे साथ आये फिल्म निदेशक पूछ बैठे : ''नीलमजी ! ढाई साल से अधिक समय से बापूजी जेल में हैं फिर भी देश और मानव-समाज का ही भला करने की सलाह साधकों को दे रहे हैं। यह सब मीडिया को क्यों नहीं दिखता ?''

मैंने कहा : ''साहब ! यह सवाल तो आप उन्हींसे पूछिये।''

बापूजी ने वहाँ आये सभी साधकों को बड़े प्रेम से सुना और वहाँ मौजूद बच्चों पर तो खास आशीर्वाद बरसाया, फिर अंदर चले गये। हम सभीके चेहरों पर एक अजीब-सी खुशी थी जिसके वर्णन के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं हैं परंतु सबके मन में एक बड़ा सवाल था कि 'बापूजी व्यासपीठ पर कब दिखेंगे ?' पूरी मुलाकात को अगर एक पंक्ति में कहूँ तो इतना ही कहूँगी कि साधकों की श्रद्धा को कोई डिगा नहीं सकता। ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु पूज्य बापूजी के दर्शन-सत्संग-सान्निध्य से साधकों ने अपने जीवन में उन्नति की ऊँचाइयों का प्रत्यक्ष अनुभव किया है और बापूजी की सच्चाई एवं अपार महानता के लिए उन्हें किसीके प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं है।

ग्रीष्मकालीन समस्याओं से बचने के उपाय

नकसीर : यह होने पर सिर पर ठंडा पानी डालें। ताजी व कोमल दूब (दूर्वा) का रस अथवा हरे धनिये का रस बूँद-बूँद नाक में टपकाने से रक्त निकलना बंद हो जाता है। दिन में दो-तीन बार १० ग्राम आँवले के रस में मिश्री मिलाकर पिलायें अथवा गन्ने का ताजा रस पिलाने से नकसीर में पूरा आराम मिलता है।

आतपदाह **(sunburn) :** धूप में त्वचा झुलस जाती है और काली पड़ जाती है। इसमें ककड़ी का रस अथवा ककड़ी के पतले टुकड़े चेहरे पर लगाकर कुछ समय बाद ठंडे पानी से धो लें। साबुन का प्रयोग बिल्कुल न करें। बेसन व मलाई मिलाकर उसे चेहरे पर लगा के चेहरा धोयें। नारियल-तेल लगाने से भी लाभ होता है। दही व बेसन मिलाकर लेप करने से आतपदाह से उत्पन्न कालापन दूर होता है।

घमौरियाँ : मुलतानी मिट्टी के घोल से स्नान करने से लाभ होता है। चौथाई चम्मच करेले के रस में १ चम्मच मीठा सोडा मिला के लेप करने से २-३ दिन में ही घमौरियों में राहत मिलती है। घमौरियों से सुरक्षा के लिए विटामिन 'सी' वाले फलों का सेवन करना चाहिए, जैसे - आँवला, नींबू, संतरा आदि। ढीले सूती कपड़ों का उपयोग करें।

गर्मी एवं पित्तजन्य तकलीफें : रात को दूध में एक चम्मच त्रिफला घृत मिलाकर पियें। पित्तजन्य दाह, सिरदर्द, आँखों की जलन में आराम मिलेगा। दोपहर को चार बजे एक चम्मच गुलकंद धीरे-धीरे चूसकर खाने से भी लाभ होता है। सुबह खाली पेट नारियल-पानी में अथवा ककड़ी या खीरे के रस में नींबू का रस मिलाकर पीने से शरीर की सारी गर्मी मूत्र एवं मल के साथ निकल जाती है, रक्त शुद्ध होता है और दाह व गर्मी से सुरक्षा होती है। (त्रिफला घृत संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा संचालित आयुर्वेदिक उपचार केन्द्रों पर उपलब्ध है। मँगवाने हेतु सम्पर्क करें : ०९२१८११२२३३)

मूत्रसंबंधी विकार : पेशाब में जलन, पेशाब के समय दर्द व रुक-रुककर पेशाब आना, बुखार आदि समस्याओं में २ ग्राम सौंफ को पानी में घोटें व मिश्री मिलाकर दिन में २-३ बार पियें। इससे गर्मी भी कम होती है। तरबूज, खरबूजा, ककड़ी आदि का सेवन भी खूब लाभदायी है।

गर्मीजन्य अन्य समस्याएँ : इस ऋतु में मानसिक उग्रता, आलस्य की प्रबलता, पित्ताधिक्य से क्रोधादि लक्षण ज्यादा देखे जाते हैं। इन समस्याओं में सुबह शीतली प्राणायाम **(देखें पृष्ठ ३१)** का अभ्यास करना बहुत लाभकारी है।

खीरे खायें, बीजों के फायदे साथ में पायें

खीरा एवं ककड़ी जहाँ गर्मियों में विशेष लाभकारी हैं, वहीं ककड़ी एवं विशेषतः खीरे के बीज पौष्टिक होने के साथ कई प्रकार की बीमारियों में भी बहुत उपयोगी हैं। खीरे के बीजों को सुखाकर छील के रख लें।

खीरे के बीजों में छुपा बीमारियों का इलाज

* १० सूखे बीज १ चम्मच मक्खन के साथ १ माह तक देने से कमजोर बालक पुष्ट होने लगते हैं। बड़ों को ३० बीज १ चम्मच घी के साथ देने से उन्हें भी लाभ होता है।
* जलन के साथ व अल्प मात्रा में मूत्र-प्रवृत्ति में ताजे बीज अथवा ककड़ी या खीरा खाने से अतिशीघ्र लाभ होता है।
* जिन्हें बार-बार पथरी होती हो वे प्रतिदिन ४ माह तक ३० सूखे बीज भोजन से पूर्व खायें तो पथरी बनने की प्रवृत्ति बंद हो जायेगी।
* पेशाब के साथ खून आने पर १-१ चम्मच बीजों का चूर्ण व गुलकंद तथा १ चम्मच आँवला-रस या चूर्ण मिला के १-२ बार लें, खूब लाभ होगा।
* श्वेतप्रदर में १ चम्मच बीज-चूर्ण, १ केला, पिसी मिश्री मिलाकर दिन में १-२ बार लेने से बहुत लाभ होता है।

ककड़ी एवं खीरे के कुछ खास प्रयोग

* गर्मी के कारण सिरदर्द, अस्वस्थता, पेशाब में जलन हो रही हो तो १ कप ककड़ी के रस में १ चम्मच नींबू रस तथा १ चम्मच मिश्री डालकर लेने से पेशाब खुल के आता है और उपरोक्त लक्षणों से राहत मिलती है।
* चेहरे के कील-मुँहासे मिटाने के लिए ककड़ी या खीरे के पतले टुकड़े चेहरे पर लगायें। आधा घंटे के बाद चेहरा धो दें।
* तलवों व आँखों की जलन में ककड़ी, ताजा नारियल व मिश्री खाना उत्तम लाभ देता है।

सावधानी : खीरा या ककड़ी ताजी ही खानी चाहिए। सर्दी, जुकाम, दमा में इनका सेवन नहीं करना चाहिए। इन्हें रात को नहीं खाना चाहिए। खीरा या ककड़ी भोजन के साथ खाने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से खाना अधिक हितकर है।

भयंकर सिरदर्द से मुक्ति

पढ़ाई के दौरान मुझे इतना सिरदर्द होने लगा, मानो माथा फट जायेगा। चलने पर सिर में हथौड़ा लगने जैसी पीड़ा होती थी। २-३ माह तक दवा ली पर ठीक नहीं हुआ, दर्द बढ़ता ही गया। आँखों से आँसू आने लगे फिर एक वस्तु दो-दो दिखने लगी, चश्मे का नम्बर आ गया। एम.आर.आई. कराया तो पता चला कि मस्तिष्क में दायीं तरफ गाँठ हो गयी है और वह धीरे-धीरे बढ़ रही है। डॉक्टर ने कहा : ''तत्काल ऑपरेशन कराओ, नहीं तो शरीर का बायाँ हिस्सा लकवाग्रस्त हो जायेगा।''

'अब जो बापूजी कहेंगे, वही करेंगे' - ऐसा सोच हम लोग बापूजी के दर्शन करने गये। जब पूज्य बापूजी व्यासपीठ पर पधारे तो मुझे और मेरे पिताजी को बुलाया। हमने प्रार्थना की तो दयासिंधु गुरुदेव ने मुझे मंत्र लिखकर दिया, बोले : ''इस मंत्र का जप शुरू कर दे। ऑपरेशन कराने की जरूरत नहीं है।'' हथेलियाँ आपस में रगड़कर आँखों पर लगानेवाला प्रयोग बताया। बड़ बादशाह (पूज्य बापूजी द्वारा शक्तिपात किया हुआ वटवृक्ष) की मिट्टी का तिलक करने और आयुर्वेदिक दवा लेने को कहा और मुझे अपने सामने वहीं बिठाया। मैं उनकी ओर श्रद्धा-विश्वास से निहारते-निहारते सतत मंत्रजप करता रहा। मुझे ऐसा लगा कि सामर्थ्य के धनी बापूजी की कृपा मुझ पर बरस रही है और गुरुदेव की शक्ति से मेरी बीमारी दूर हो रही है। बापूजी की आज्ञानुसार किया तो २० दिन में ही परिणाम सामने आ गया। भयंकर सिरदर्द, एक की जगह दो-दो वस्तुएँ दिखना - सब बंद हो गया, साथ ही चश्मे का नम्बर दूर हो गया।

- देवेन्द्र कड़िया, अहमदाबाद, सचल दूरभाष : ०९९७४०९९९४२

'खान ! तुझे कुछ नहीं होगा'

१३ सितम्बर २०१५ को अचानक मेरी तबीयत बिगड़ गयी। डॉक्टरों को दिखाया तो बोले : ''डेंगू हो गया है। किसी अच्छे अस्पताल में भर्ती कराओ।''

अगले दिन आई.सी.यू. में भर्ती कर दिया। लगातार प्लेटलेट्स कम होने से मैं बेहोश था। डेंगू लास्ट स्टेज पर पहुँच चुका था। प्लेटलेट्स चढ़ाने के बाद भी घट ही रहे थे। शरीर हिलने-डुलने में भी लाचार था।

१६ तारीख की रात को डॉक्टरों ने घरवालों को बोल दिया : ''अब हम कुछ नहीं कर सकते। आप इन्हें ले जा सकते हैं।''

मुझे होश आया तो मैंने मन-ही-मन गुरुदेव से प्रार्थना की : 'बापूजी ! मैं लाचार हूँ, गुरुमंत्र की माला भी नहीं कर सकता। आप सबकी सुनते हो, अब आप ही कुछ कीजिये।' ऐसा कहकर मैं शांत हो गया। तभी मेरे बापूजी 'हरि ॐ हरि ॐ' कहते हुए प्रकाश-पुंज में प्रकट हुए, बोले : ''खान ! तुझे कुछ नहीं होगा।'' बापूजी का दिया स्वास्थ्य मंत्र मुझे याद आया और मैं जपने लगा, जिससे मेरी स्थिति सुधरने लगी। तीन दिन से उठ नहीं पा रहा था पर अगले दिन उठकर बाथरूम तक गया। प्लेटलेट्स २० हजार बढ़ गये ! पूज्य बापूजी की कृपा से कुछ ही दिनों में मैं बिल्कुल ठीक हो गया। पूजनीय संत श्री आशारामजी बापू के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !

- मुहम्मद भुट्टो खान, अलीगढ़ (उ.प्र.), सचल दूरभाष : ०९३५९६१३३६१

देशभर में चल रहे सेवाकार्यों की झलकें

समाज के पिछड़े-से-पिछड़े वर्ग की पीड़ाओं का निर्मूलन करने व उनके उत्थान के लिए पूज्य बापूजी द्वारा किये जा रहे अथक प्रयत्नों का, उनकी करुणा व परदुःखकातरता का वर्णन कर पाना असम्भव है। पूज्यश्री के कल्याणकारक मार्गदर्शन में देशभर में चल रहे संत श्री आशारामजी आश्रमों व सेवा-समितियों द्वारा लोक-कल्याणार्थ अनेक सेवाकार्य सतत चल रहे हैं।

गत माह में ग्वालियर आश्रम (म.प्र.) द्वारा आदिवासी इलाके के आठ गाँवों में भंडारों का आयोजन किया गया तथा कपड़े, आँवला रस की बोतलें, मिठाई, 'नशे से सावधान' सत्साहित्य आदि वितरित कर नकद राशि दी गयी। सुमेरपुर एवं केलिया पाड़ा जि. बाँसवाड़ा (राज.) में हुए विशाल भंडारों में भी अनाज, कपड़े, चप्पल आदि का निःशुल्क वितरण किया गया।

छत्तीसगढ़ व महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों के कई सार्वजनिक स्थलों पर निःशुल्क जल प्याउएँ लगायी गयीं। डाकोर जि. खेड़ा में अहमदाबाद आश्रम द्वारा हजारों पदयात्रियों में पलाश शरबत वितरण किया गया।

महाराष्ट्र में ५ स्थानों पर निःशुल्क होमियोपैथिक चिकित्सा शिविर लगाये गये। रायपुर (छ.ग.) में श्रीमद्भगवद्गीता को पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। लखौली आरंग जि. रायपुर (छ.ग.), अहमदाबाद आश्रम आदि में विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर तथा इंदौर, ग्वालियर (म.प्र.), भुवनेश्वर (ओड़िशा) व पटना में तेजस्वी युवा शिविरों का आयोजन किया गया।

नंदपुर जि. जम्मू व जम्मू आश्रम में हुए संत-सम्मेलनों में उपस्थित संतों ने पूज्य बापूजी की तत्काल रिहाई की माँग की। इनमें श्री फूलकुमार शास्त्रीजी, श्री बिशन शास्त्रीजी, साध्वी गंगाजी, श्री गंगाधरजी महाराज, श्री भूपेन्द्र शास्त्रीजी आदि भागवत कथाकार एवं साध्वी संतोष बहनजी सहित अनेक मान्यवर उपस्थित थे। इस अवसर पर भंडारे का भी आयोजन किया गया।

सूरत, वराछा जि. सूरत (गुज.) व बारून बाजार जि. फैजाबाद (उ.प्र.) में ऋषि प्रसाद अभियान पूरे उत्साह व गति से चलाया जा रहा है। बिलासपुर (हि.प्र.), कल्याण, उल्हासनगर, अम्बरनाथ, बदलापुर जि. ठाणे (महा.) व कोलकाता (प. बंगाल) में ऋषि प्रसाद व ऋषि दर्शन सम्मेलन एवं जपमाला-पूजन कार्यक्रम हुए।

निकली भव्य यात्राएँ सजायी गयी प्रेरणाप्रद झाँकियाँ

श्रीराम नवमी पर देश के अनेक स्थानों पर स्थानीय आश्रमों द्वारा संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं। जोधपुर तथा बाड़मेर (राज.) में विश्व हिन्दू परिषद के तत्त्वावधान में निकाली गयी विशाल यात्राओं में संत श्री आशारामजी आश्रम की ओर से भी विभिन्न आकर्षक झाँकियों का समावेश किया गया। ये प्रेरणाप्रद झाँकियाँ लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनी रहीं। बाड़मेर में आश्रम की झाँकी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

चेटीचंड पर्व पर भी जोधपुरसहित देश के कई स्थानों पर संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं। दरबा जि. धमतरी (छ.ग.), सूरत (गुज.), कानपुर (उ.प्र.) व जम्मू में साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज के प्राकट्य दिवस के अवसर पर संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं। **(सेवाकार्यों की तस्वीरों हेतु देखें आवरण पृष्ठ)**

उज्जैन कुम्भ में आश्रम द्वारा आयोजित प्रवचन-कार्यक्रम

पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा व आशीर्वाद से उज्जैन कुम्भ में निम्नानुसार प्रवचन-कार्यक्रम रखे गये हैं। कुम्भ में आनेवाले सभी धर्मप्रेमी भाई-बहन इनका लाभ अवश्य लें।

- **०९ से ११ मई : साध्वी रेखा बहन**
- **१४ व १५ मई : साध्वी कृष्णा बहन**
- **१६ से १८ मई : श्री रामा भाई**
- **१९ से २१ मई : साध्वी तरुणा बहन**

समय : शाम ४ से ७ बजे तक

स्थान : चिंतामन रोड, इंदौर-बड़नगर बायपास के निकट (लगभग १ कि.मी. आगे), उज्जैन (म.प्र.) सम्पर्क : ०८९५९८८४८९४, ०९६८५८६२४२८.

जेहि निंदे सो देह हमारी, जो निंदे को काही।
निंदक निंदा करि पछितावै, साधु न मन में लाहीं।।

'विवेकवान समझते हैं कि यदि कोई हमारी निंदा करता है तो वह हमारे अपने माने गये शारीरिक नाम-रूप की ही निंदा कर रहा है, मुझ शुद्ध चेतन में उसका कोई विकार नहीं आ सकता। जो निंदा करता है वह कौन है और वह किसकी निंदा करता है, इसका उसे पता नहीं है। वह यदि अपने देहातीत आत्मस्वरूप को समझ ले तो न दूसरे की निंदा करेगा और न अपनी निंदा पाकर दुःखी होगा। निंदक को निंदा करके अंत में केवल पश्चात्ताप ही हाथ लगता है लेकिन सज्जन तथा साधु निंदक की बातों को अपने मन पर ही नहीं लाते हैं।' कि वे साधु एवं उत्तम मनुष्य कहलाते हैं। वे सदैव सद्गुरु के उपदेशों के अनुसार चलते हैं।' - संत कबीरजी

प्राकृतिक, पवित्र वातावरण में अनुष्ठान व मौन-मंदिर साधना

अपनी सुषुप्त शक्तियों को जगाने तथा ईश्वरप्राप्ति के परम लक्ष्य की ओर तीव्र गति से बढ़ने में मंत्र-अनुष्ठान व मौन-मंदिर साधना विशेष लाभकारी है।

रतलाम (म.प्र.) से १७ कि.मी. की दूरी पर स्थित 'संत श्री आशारामजी आश्रम', पंचेड़ का वातावरण बड़ा पवित्र व सुरम्य है। पिछले ३० वर्षों में यहाँ पूज्य बापूजी के पावन सान्निध्य में अनेक 'ध्यानयोग साधना शिविर' सम्पन्न हुए हैं। अन्य दिनों में भी पूज्य बापूजी का पावन सान्निध्य इस धरा को लम्बे समय तक मिलता रहा है। यहाँ पर वर्षभर अनुष्ठान व मौन-मंदिर की सुविधा उपलब्ध रहती है। पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षित साधक भाई इस पुण्यस्थली का लाभ ले सकते हैं। **सम्पर्क : संत श्री आशारामजी आश्रम, पंचेड़, जि. रतलाम (म.प्र.)**

सचल दूरभाष : ०७४१२२६९२६३, ०९८२७५९६१०६.

अहमदाबाद आश्रम में भी मंत्र-अनुष्ठान के साथ मौन-मंदिर की व्यवस्था वर्षभर उपलब्ध है। जो भूमि पिछले ४५ वर्षों से पूज्य बापूजी के ब्रह्मानंद के पावन स्पंदनों से सुस्पंदित होती रही है, ऐसी शीघ्र उन्नतिकारक भूमि पर मंत्र-अनुष्ठान का सुअवसर मिलना बड़े सौभाग्य की बात है।

संत श्री आशारामजी महिला उत्थान आश्रम, अहमदाबाद में साधिका बहनों के लिए मंत्र-अनुष्ठान की व्यवस्था है।

अन्य अनेक संत श्री आशारामजी आश्रमों में भी पूज्यश्री से मंत्रदीक्षित साधकों हेतु अनुष्ठान व मौन-मंदिर साधना की व्यवस्था है। **अपने नजदीकी आश्रम में इनका लाभ लेने हेतु सम्पर्क करें : (०७९) ३९८७७७२९.**

महिला उत्थान मंडल द्वारा आयोजित ७ दिवसीय जप-अनुष्ठान शिविर

* आश्रम के पवित्र, शांत व आध्यात्मिक वातावरण में जप-ध्यान, साधना के साथ पूज्य बापूजी के दुर्लभ सत्संग का लाभ। * साधना में त्वरित गति से आगे बढ़ानेवाली पूज्यश्री द्वारा प्रदान की गयी अनमोल कुंजियों का प्रत्यक्ष प्रयोग एवं योग-प्रशिक्षण।
* अनुभवी विशेषज्ञों द्वारा समस्या-समाधान व मार्गदर्शन।
* आकर्षक प्रतियोगिताएँ।

दिनांक : २९ मई से ४ जून २०१६

(केवल महिलाओं एवं युवतियों हेतु)

स्थान : संत श्री आशारामजी महिला उत्थान आश्रम, अहमदाबाद-५,

सम्पर्क : ०९१५७३०६३१३, (०७९) ३९८७७८२७.

अवतरण दिवस से शीतल शरबत व छाछ वितरण अभियान का नवीनीकरण

ऋषि प्रसाद सम्मेलनों में लिया गया 'ऋषि प्रसाद' को घर-घर तक पहुँचाने का संकल्प

जोधपुर कारागृह को सजाकर व पूजा-अर्चना करके साधकों ने मनाया पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस

RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2015-17
WPP LIC No. U (C)-232/2015-1
Posting at ND PSO on
10th & 11th of E.M.
Date of Publication: 1st April 201

अवतरण दिवस अर्थात् 'विश्व सेवा-सत्संग दिवस' के कुछ दृश्य

गरीबों में भंडारा एवं जीवनोपयोगी सामग्री-वितरण

जोधपुर

सफाई अभियान

संकीर्तन यात्रा

प्रसाद एवं शरबत वितरण

अहमदाबाद

अवतरण दिवस महोत्सव

शरबत-वितरण

देश के अन्य अनेक स्थानों पर भी हुए गरीबों में भंडारे, बँटी जीवनोपयोगी सामग्री

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।